विशिष्ट आलेख

अनुगूँज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष–11, अंक– 2 अक्तूबर,20 – मार्च,2021

डॉ. सुमीत जैरथ, आईएएस
सचिव, राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. एस.के. पाटील
कुलपति- इंदिरा गांधी
कृषि विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु , राज्यपाल झारखंड, नराकास (बैंक) कोलकाता की स्मृतिका ग्रहण करते हुए, साथ में हैं श्री गौतम पात्र, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, रांची अंचल कार्यालय

डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार विश्व हिंदी दिवस स्मृतिका ग्रहण करते हुए, साथ में हैं श्रीमती नीरजा शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), नई दिल्ली अंचल कार्यालय

श्री अजय व्यास जी,
कार्यपालक निदेशक का लखनऊ दौरा

श्री इशराक अली खान का
प्रधान कार्यालय में स्वागत

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष-11, अंक-2 अक्तूबर, 20 - मार्च, 2021
एक टीम,एक स्वप्न,एक लक्ष्य - सक्षम हैं हम-जीतेंगे हम

संरक्षक
अतुल कुमार गोयल
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा
अजय व्यास
इशराक अली खान
कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन
नरेश कुमार
महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा

संपादक
अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
आलोक कुमार श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
सत्येंद्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
विशाल कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)

प्रकाशन
यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय
10, बीटीएम सरणी, कोलकाता -700001
ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in
फोन -033 4455 7384

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों है। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं हैं।

कुल पृष्ठ –52, हिंदी पृष्ठ – 44 (84%); क्षेत्रीय भाषा पृष्ठ –8 (16%)

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक I का संदेश	3
कार्यपालक निदेशक II का संदेश	4
महाप्रबंधक-राजभाषा का संदेश	5
संपादकीय	6
माननीय सचिव, राजभाषा का अर्ध-शासकीय पत्र	7
विशिष्ट आलेख	
12 'प्र' से होगा राजभाषा हिंदी का समुचित विकास डॉ. सुमीत जैरथ	8
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्व : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान - डॉ. एस.के. पाटील	12
आमुख लेख - कार्यपालक विमर्श	
आत्मनिर्भर भारत : रविशंकर नारायण	15
आत्मनिर्भर भारत : बैंकों की भूमिका – अमित श्रीवास्तव	17
आत्मनिर्भर भारत : बैंकों की भूमिका – यश मंगल	19
सांस्कृतिकी	
सांस्कृतिक संकट और हमारा दायित्व	21
कविताई	
बसंत आ रहा है	24
भाषा सौहार्द	
मैथिली / कोंकणी / बोडो / तेलुगू	25-32
विविध	
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 में भाषा विमर्श	33
सतर्क भारत : समृद्ध भारत	36
सतर्क भारत : समृद्ध भारत	37
साइबर जगत	
तेनाली की साइबर कथाएं	38
भाषा - राजभाषा	
जनता की सेवा - जनता की भाषा में : इस बार पंजाबी	40
विविध गतिविधियां	41-52
5 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण/ नराकास की 70 वीं बैठक राष्ट्रीय तकनीकी संगोष्ठी / यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान स्थापना दिवस / गणतन्त्र दिवस / विश्व हिंदी दिवस मातृभाषा एवं महिला दिवस / राजभाषा अधिकारी सम्मेलन यूको मातृभाषा सम्मान / यूको राजभाषा सम्मान यूको बैंक जी डी बिड़ला व्याख्यानमाला	

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

हम एक नए वित्तीय वर्ष 2021-22 में प्रवेश कर चुके हैं और अब यह समय है कि हम बीते साल का अवलोकन करें, अपने अच्छे और बुरे अनुभवों से सीखें तथा आनेवाले अवसरों के लिए तैयार रहें । नव सामान्य नियमों के साथ हमें अपने व्यवसायों को अपनी बुद्धिमता से आगे बढ़ाने के लिए अपने विकास के रोडमैप को पुन: व्यवस्थित और अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

तमाम चुनौतियों के बावजूद, यूकोजनों ने महामारी की चुनौतियों का सामना करने के लिए असाधारण उत्साह, इच्छाशक्ति एवं योग्यता का परिचय दिया है और हमारे ग्राहकों को निर्बाध सेवाएं प्रदान की है। मैं सभी यूकोजन को उनकी प्रतिबद्धता और समर्पण के लिए बधाई देता हूँ तथा उनके परिवार के सदस्यों का भी शुक्रगुजार हूं जिन्होंने इस मुश्किल घड़ी में उनका समर्थन दिया जिससे प्रोत्साहित होकर वे राष्ट्र के जरूरतमंद लोगों की तत्परता से सेवा कर पाए।

इस महामारी ने सभी वित्तीय संस्थानों को एक अस्थायी झटका दिया है, हम भी इससे अछूते नहीं हैं । ग्राहकों के लिए राहत उपायों, जैसे आस्थगन, पुनर्गठन और आपातकालीन क्रेडिट लाइनों की उपलब्धता के बावजूद, बैंक की दबावग्रस्त संपत्तियों में कई गुणा वृद्धि हुई लेकिन वास्तविक स्लिपेज शुरुआत के अनुमान से कम हुई और यह सब संभव हो सका है सभी यूकोजन के अथक प्रयासों के कारण जिन्होंने दबावग्रस्त उधारकर्ताओं से अतिदेय राशि की वसूली की। पिछली तिमाही एनपीए की वसूली में महत्वपूर्ण गति आई है, इसे निरंतर बनाए रखने और मजबूत करने की आवश्यकता है ।

आने वाले वर्ष में भी **हमारा मंत्र वसूली के साथ-साथ प्रौद्योगिकी के सहयोग से ग्राहक अधिग्रहण और लीड जनरेशन** पर केंद्रित होना चाहिए। हमारी टर्नअराउंड कहानी का एक महत्वपूर्ण कारण हमारा प्रावधान कवरेज अनुपात अधिक होना है । भारत सरकार द्वारा रु. 2600 करोड़ पूंजी दिए जाने के कारण भी हमारी पूंजी की स्थिति अच्छी हो गई है ।

कोरोनावायरस का प्रकोप अभी भी जारी है। इस कठिन समय में हमें सावधान रहते हुए खुद को एवं अपने परिवार को इस महामारी से बचाना है। मुझे विश्वास है कि प्रत्येक यूकोजन हर समय आवश्यक एहतियात बरत रहे हैं ।

आप सभी को एक सुखद, सफल और समृद्ध वित्तीय वर्ष 2021-22 की हार्दिक शुभकामनाएँ । हम कामना करते हैं कि आने वाले समय में आप अपने सभी निजी और व्यावसायिक लक्ष्य की अवश्य प्राप्ति करें।

स्वस्थ यूकोजन, स्वस्थ यूको बैंक

शुभकामनाओं सहित

अ. कु. गोयल

(अतुल कुमार गोयल)

कार्यपालक निदेशक -I का संदेश

प्रिय यूकोजन,

पिछली कई तिमाहियों में हमारे बैंक ने शानदार प्रदर्शन किया है और यह सब हमारे मेहनती और जुझारू यूकोजन के कारण संभव हुआ है जिन्होंने कोविड महामारी जैसी कठिन परिस्थिति को झेलते हुए यह अद्भुत कारनामा कर दिखाया। अभी मार्च, 2021 तिमाही के परिणाम आने बाकी हैं और मुझे पूरी उम्मीद है कि इस बार भी हम अपने प्रिय प्रबंध निदेशक की उम्मीदों पर खरा उतरेंगे । हमें यह भी उम्मीद है कि पिछली तिमाहियों में किए गए बेहतर कार्य के कारण हमारा बैंक बहुत जल्द आरबीआई के पीसीए प्रतिबंध से बाहर होगा।

कोविड के प्रकोप के बाद बैंकिंग व्यवसाय में एक जबर्दस्त परिवर्तन देखा गया है जो मुख्य रूप से डिजिटलीकरण पर केंद्रित है। हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाएंगे हमें डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देना होगा। आज बैंकों के बीच अपने **एम-बैंकिंग एप्प** को ग्राहकों के मोबाइल फोन के होम स्क्रीन पर लाने की होड़ मची है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि विश्व तेजी से डिजिटलीकरण की ओर अग्रसर हो रहा है और वह दिन दूर नहीं जब बैंकिंग के लिए बैंक जाने की आवश्यकता नहीं होगी। वर्तमान में हमारे समस्त ग्राहकों में से केवल 10% ग्राहक हमारे मोबाइल बैंकिंग एप्प का प्रयोग कर रहे हैं। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हमारे अधिक से अधिक ग्राहक हमारे डिजिटल चैनल का व्यवहार करें।

खुदरा आस्तियों और कासा (CASA) देनदारियों की ओर हमारा ध्यान एक विविध ग्राहक आधार को कायम रखने में मदद करता है। हमारा ध्यान इस वर्ष अपने उत्पादों की क्रॉस सेलिंग और डिजिटल उत्पादों के विपणन के माध्यम से प्रति ग्राहक उत्पादों को बढ़ाना रहेगा अर्थात हमारे एक ग्राहक के पास हमारे बैंक के एक से अधिक उत्पाद हो, यह हमारा लक्ष्य होगा। हम यह सुनिश्चित करें कि **बेहतर प्रदर्शन और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा** हमारे बैंक को उच्च स्तर तक ले जाने और सफल बनाने के लिए एकमात्र मानदंड हो।

वैश्विक महामारी की चुनौती अभी भी हमारे सामने खड़ी है। परंतु इस संकट से हमें विचलित नहीं होना है। हम अपने मन में नकारात्मक भाव उत्पन्न न होने दें। सतर्क रहें, एहतियात बरतें, कोविड प्रोटोकॉल का अनुसरण करें। मैं ईश्वर से आपके एवं आपके परिवार के स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

यह बुरा समय ही तो है, हम और आप मिलकर इसे पार करेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अजय व्यास

(अजय व्यास)

कार्यपालक निदेशक -II का संदेश

प्रिय यूकोजन,

यूको बैंक में मैंने 10 मार्च, 2021 को कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यग्रहण किया है। मुझे यूको परिवार का हिस्सा बने कुछ ही दिन हुए हैं । हमारे प्रिय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल जी के नेतृत्व में यह बैंक बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है । यूको बैंक को इतना बढ़िया नेतृत्व प्राप्त हो रहा है, मुझे गर्व है कि मैं भी अब यूकोजन कहलाता हूं ।

कार्यग्रहण के पश्चात यह पहला अवसर है जब मुझे यूकोजन से कुछ कहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । इन चंद दिनों में मैं आप सभी को जितना जान पाया पाया हूं उससे एक बात तो स्पष्ट है कि यूको बैंक का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है । श्री गोयल जी जैसे ऊर्जावान एवं तेजस्वी एमडी के नेतृत्व में कार्य कर रहे हमारे सभी यूकोजन भी बेहद परिश्रमी और बैंक के प्रति समर्पित हैं । यह हर्ष की बात है कि मुझे ऐसी ऊर्जावान और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संकल्पित टीम के साथ कार्य करने अवसर प्राप्त हुआ है ।

जैसा कि मुझे बताया गया है कि 17 तिमाही के बाद यूको बैंक ने मार्च, 2020 तिमाही में शुद्ध लाभ अर्जित किया है और तब से लेकर अभी तक लाभ अर्जन का सिलसिला जारी है । अभी मार्च 2021 तिमाही के परिणाम आने बाकी हैं, हम उम्मीद करते हैं कि इस तिमाही भी हम बेहतर लाभ अर्जित करने में सक्षम होंगे तथा पीसीए का जो प्रतिबंध लगा है, वह भी हट जाएगा । **यह सब शीर्ष प्रबंधन के कुशल नेतृत्व और परिश्रमी यूकोजन के कारण ही संभव हो पाया है । आप सभी यूकोजन इसके लिए बधाई के पात्र हैं ।**

आप सभी प्रिय यूकोजनों से मेरा अनुरोध है कि कोरोना महामारी की इस कठिन परिस्थिति में हमें बिलकुल भी घबराना नहीं है, हम हिम्मत से काम लें, सकारात्मक रहें और कोविड प्रोटोकॉल का ईमानदारी से पालन करें । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की पंक्ति से मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा :

नर हो, न निराश करो मन को ।

शुभकामनाओं सहित

इशराक अली खाँ

(इशराक अली खान)

महाप्रबंधक - मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा का संदेश

प्रिय साथियो,

पिछले वित्तीय वर्ष 2020-21 में हमने कोरोना संकट के बीच काफी अच्छा काम किया है और इसके अच्छे परिणाम भी हमारे समक्ष हैं। यद्यपि कोरोना का संकट विकराल था, तथापि अपने ओजस्वी एमडी सर के नेतृत्व में हम सब ने इस कठिन परिस्थिति में भी बहुत कुछ अच्छा कर दिखाया है। स्वामी विवेकानंद की पंक्ति मुझे याद आ रही है–

संघर्ष जितना बड़ा होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी ।

इसमें कोई शक नहीं है कि कोविड से उत्पन्न आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और आगे भी निभानी है। जैसे इस महामारी से उबरने के लिए अपने शरीर की रोग निरोधक क्षमता बढ़ाना तथा टीकाकरण करना महत्वपूर्ण है ठीक उसी प्रकार हमारे बैंक की सतत वृद्धि की कुंजी **अच्छे ऋण देना और अनर्जक आस्तियों की वसूली के माध्यम से बैंक परिसंपत्ति की गुणवत्ता में सुधार को बढ़ावा देना है।** मुझे आशा है कि वसूली, नए गुणवत्ता वाले ऋण और खर्च प्रबंधन में हमारे सतत प्रयास से हम एक मजबूत बैंक बनने की यात्रा को जारी रख पाएंगे।

कोरोना महामारी से उत्पन्न परिस्थिति से जूझने के लिए बैंक ने कई स्टाफ कल्याणकारी योजनाएं अपनाईं। अभी भी इसका प्रकोप जारी है जिसे ध्यान में रखते हुए बैंक ने कोविड-19 से किसी भी स्टाफ सदस्य की असमय मृत्यु के कारण रु. 20 लाख की वित्तीय सहायता वाली योजना को जारी रखा है।इसके साथ ही कोरोना जांच हेतु राशि की प्रतिपूर्ति, कोरोना टीकाकरण व्यय प्रतिपूर्ति तथा कोरोना संक्रमित होने वाले स्टाफ को इलाज हेतु विशेष छुट्टी भी प्रदान की जा रही है।

वर्तमान परिस्थिति में सकारात्मक रहते हुए धैर्य से कार्य करने की आवश्यकता है। नकारात्मक खबरों पर ध्यान न दें। स्वयं का और अपने परिजनों का ख्याल रखें।

शुभकामनाओं के साथ।

नरेश कुमार

(नरेश कुमार)

सम्पादकीय

प्रिय पाठकगण,

अनुगूँज के नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करने में हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अंक का थीम विषय **"आत्मनिर्भर भारत : बैंकों की भूमिका"** है। इस अंक में **डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** का विचारोत्तेजक आलेख "**12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास" शामिल है जो राजभाषा हिंदी की एक समृद्ध भाषा के रुप में आत्मनिर्भर बनने की स्थिति को प्रतिपादित करता है।** हमारे रायपुर अंचल कार्यालय द्वारा**आयोजित यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत** डॉ. एस के पाटिल, कुलपति,इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के **"भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्व – सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान"** विषय पर दिया गया महत्वपूर्ण व्याख्यान भी इस अंक की शोभा बढ़ाते हैं। इसके साथ ही सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा बैंक के एमडी एवं सीईओ को संबोधित अर्ध शासकीय पत्र भी इसी शृंखला में शामिल है। वस्तुतः शीर्ष विद्वानों के लेख/सामग्री हमारी पत्रिका की श्रीवृद्धि के द्योतक हैं।

अनुगूँज के थीम विषय पर **"कार्यपालक विमर्श"** स्तंभ के अंतर्गत बेंगलुरु तथा हैदराबाद अंचल के अंचल प्रबंधकों का महत्वपूर्ण आलेख हमें प्राप्त हुआ। ओंकार राम टाक की कविता- बसन्त आ रहा है का भाव अंधेरे में आशा का दीपक की तरह है। भाषा सौहार्द स्तंभ के अंतर्गत इस अंक के लिए **बोडो, कोंकणी,मैथिली एवं तेलुगू** भाषाओं में लेख दिए जा रहे हैं। क्षेत्रीय भाषाओं ने वास्तविक तौर पर हमारे सभी यूकोजनों के हृदय को स्पर्श किया है।

नव सामान्य के नियमों को आत्मसात करते हुए इस छमाही के दौरान हमारे विभाग द्वारा ऑनलाइन कई उत्कृष्ट कार्यक्रम संपन्न किए गए। 15 अक्तूबर, 2020 को नराकास की 70 वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में **महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी,** राज्यपाल, झारखंड शामिल हुईं । नवंबर माह के प्रथम सप्ताह में बैंक के राजभाषा अधिकारियों के लिए 5 दिवसीय गहन अनुवाद प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। 11 दिसंबर, 2020 को **"माइक्रोसॉफ्ट वर्ड एवं एक्सेल – हिंदी"** विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रुप में डॉ मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग की गरिमामयी उपस्थिति थी। इसी माह अंचल कार्यालय एर्णाकुलम के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में**"यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान"** 96 वर्षीय पद्मश्री **डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर**, संस्थापक एवं अध्यक्ष, केरल हिंदी साहित्य आकदमी को प्रदान किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में **विश्व हिंदी सचिवालय,मॉरीशस एवं महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सहयोग से "वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा एवं संस्कृति"** विषय पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। 08 मार्च, 2021 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस एवं अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में **"मातृभाषा एवं हमारे संस्कार**" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रुप में श्रीमती मधु कांकरिया, प्रख्यात लेखिका, कथाकार एवं उपन्यासकार ढाका, बांग्लादेश से जुड़ी थीं।

किसी भी पत्रिका की कसौटी उसके पाठकगण होते हैं और मेरा विश्वास है कि अनुगूंज का यह अंक भी पिछले अंकों की तरह सभी पाठकों की कसौटी पर खरा उतरेगा। हम अपने प्रयास में कितना सफल रहे हैं इसका आकलन आप सभी पाठकगण की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों से हो सकता है। आपकी प्रतिक्रिया और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।
इस महासंकट की घड़ी में सभी की मंगलकामना के साथ,

(अमलशेखर करणसेठ)

डॉ सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.
सचिव
Dr. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

अ.शा. पत्र सं. 11011/14/2020-रा.भा.(अनु.)

दिनांक: 30 मार्च, 2021

विषय : संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वित्तीय वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम।

प्रिय अतुल,

राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार हमें हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को तीव्र करना है; एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करके उसे कार्यान्वित करना है। इसके अनुसरण में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा अनुपालन के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। इसी क्रम में मुझे बहुत हर्ष और गर्व है कि संघ का राजकीय कार्य अत्यंत उत्साह और उल्लास के साथ हिंदी में करने के लिए वित्तीय वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जा रहा है, जिसकी प्रति संलग्न है। यह राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर भी उपलब्ध है।

2. **माननीय प्रधानमंत्री - श्री नरेन्द्र मोदी जी के "स्मृति विज्ञान" (Mnemonics) से प्रभावित होकर; माननीय गृह मंत्री – श्री अमित शाह जी के कुशल मार्गदर्शन तथा माननीय गृह राज्य मंत्री – श्री नित्यानंद राय जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में राजभाषा विभाग ने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए 12 "प्र" की रूपरेखा और रणनीति तैयार की है जिसके स्तंभ हैं :**

- **प्रेरणा (Inspiration and Motivation)**
- **प्रोत्साहन (Encouragement)**
- **प्रेम (Love and affection)**
- **प्राइज़ अर्थात पुरस्कार (Rewards)**
- **प्रशिक्षण (Training)**
- **प्रयोग (Usage)**
- **प्रचार (Advocacy)**
- **प्रसार (Transmission)**
- **प्रबंधन (Administration and Management)**
- **प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)**
- **प्रतिबद्धता (Commitment)**
- **प्रयास (Efforts)**

3 राजभाषा विभाग का मानना है कि पहले 10 "प्र" हिंदी कार्यान्वियन की गति को तीव्र करने के लिए आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं; अंतिम 2 "प्र" – शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं।

4. उपरोक्त के आलोक में, मैं आपसे पुन: आग्रह करता हूं कि राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार आप हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाएं; स्वयं मूल कार्य हिंदी में करें जिससे आपके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplary Leadership) से सभी को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिले और समय-समय पर हिंदी के प्रभावी कार्यान्वियन की निगरानी (Monitoring) भी करें।

5. राजभाषा विभाग आपसे पुन: अनुरोध करता है :

(क) **हर माह में एक बार सचिव / अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम-काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वियन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें।**

(ख) **अपने मंत्रालय/ विभाग/ संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/ प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वियन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।**

6. **इस संदर्भ में केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों को पुन: बल देना भी उपयुक्त होगा - सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना; देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना – दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से दस-दस अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना; हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।**

7. **मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि हम सभी के सार्थक और सामूहिक प्रयासों से हम सब राजभाषा प्रयोग संबंधी संवैधानिक और सांविधिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे; संकल्प से सिद्धि हासिल करेंगे।**

जय राजभाषा ! जय हिंदी !

शुभेच्छु,

सुमीत जैरथ 30/03/2021

(डॉ. सुमीत जैरथ)

श्री अतुल कुमार गोयल,
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
यूको बैंक,
चौथा तल, हेड ऑफिस,
10, बी टी एम साराणी,
कोलकाता-700001

डॉ. सुमीत जैरथ
सचिव, राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है। विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है। विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों **आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं। इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं।**

विशिष्ट आलेख

12 'प्र' से किया जा सकता है राजभाषा हिंदी का समुचित विकास

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रुप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। **वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/ मंत्रालयों/ उपक्रमों/ बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए।** तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरुप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रुप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रुप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने केलिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ प्रधानमंत्री जी के **"आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों(Self Reliant India- Be vocal for local)** के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत में सी-डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल **"कंठस्थ"** का विस्तार कर रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरुपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो|

राजकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिंदी

के प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा विकास की गति को तीव्र करने संबंधी संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करने के संबंध में हमारी प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान'(Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। विदेश से भारत में निवेश बढ़ाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के छह डी-

Democracy (लोकतंत्र)

Demand (मांग)

Demographic Dividend (जनसांख्यिकीय विभाजन)

Deregulation (अविनियमन)

Descent (उत्पत्ति)

Diversity (विविधता)

से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने "12 प्र की रणनीति-रूपरेखा (Frame work) की संरचना की है, जो निम्न प्रकार से है :

1 <u>प्रेरणा (Inspiration and Motivation)</u>

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

2 <u>प्रोत्साहन (Encouragement)</u>

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

3 प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

4 <u>प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)</u>

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों / विभागों / बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों /विभागों / उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल **'कंठस्थ'** के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता एवं सचिव(रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग छह महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 20गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा एवं प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

5 <u>प्रशिक्षण (Training)</u>

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान -केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्वदेशी NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

6 प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

7 प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी राजभाषा हिंदी के मेसकोट- ब्रैंड राजदूत (Brand Ambassadors) के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वत: ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

8 प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों / बैंकों/ उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। **राजभाषा विभाग द्वारा अपनी वेबसाइटrajbhasha.gov.inपर बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे ।** राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

9 प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

10 प्रमोशन (पदोन्नति) (Promotion)

राजभाषा हिंदी में तभी अधिक ऊर्जा का संचार होगा, जब राजभाषा कार्यान्वियन के लिए नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारी ; केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के सदस्यगण, सभी उत्साहवर्धक और ऊर्जावान हों और अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएं| समय-समय पर प्रमोशन (पदोन्नति) मिलने पर निश्चित रूप से उनका मनोबल बढ़ेगा और इच्छाशक्ति सुदृढ़ होगी|

11 प्रतिबद्धता (Commitment)

राजभाषा हिंदी को और बल देने के लिए मंत्रालय/ विभाग/ सरकारी उपक्रम / राष्ट्रीयकृत बैंक के शीर्ष नेतृत्व (माननीय मंत्री महोदय, सचिव, संयुक्त सचिव (राजभाषा), अध्यक्ष और महाप्रबंधक) की प्रतिबद्धता परम आवश्यक है । माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव अनुसार और राजभाषा विभाग के अनुभव से यह पाया गया है कि जब शीर्ष नेतृत्व हिंदी के प्रगामी/उत्तरोत्तर ही नहीं, अपितु अधिकतम प्रयोग के लिए स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हैं तब उनके उदाहरणमय नेतृत्व (Exemplery Leadership) से पूरे मंत्रालय / विभाग / उपक्रम/बैंक को प्रेरणा

और प्रोत्साहन मिलता है । जब वे हिंदी के लिए एक अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाते हैं और बीच-बीच में हिंदी के कार्यान्वयन की निगरानी (Monitoring) करते हैं तब हिंदी की विकास यात्रा और तीव्र होती है **जैसे कि गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय में देखा गया है ।** अभी हाल में ही राजभाषा विभाग ने सबको पत्र लिखकर आग्रह किया है :

(क) हर माह में एक बार सचिव/अध्यक्ष अपनी अध्यक्षता में जब वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक करते हैं तब इसमें हिंदी में काम- काज की प्रगति और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन का मद भी अवश्य रखें और चर्चा करें।

(ख) अपने मंत्रालय / विभाग / संस्थान में अपने संयुक्त सचिव (प्रशासन)/प्रशासनिक प्रमुख को ही हिंदी कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व दें और हर तिमाही में उनकी अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC) की बैठक करें।

12 प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। **यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि**

" लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती कोशिश करने वालों की हार नहीं होती नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है मन का विश्वास रगों में साहस भरता है चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती कोशिश करने वालों की हार नहीं होती डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती कोशिश करने वालों की हार नहीं होती असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"

संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए राजभाषा हिंदी को और अधिक सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयासरत है । विभाग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) का भी आश्रय ले रहा है| विभाग का मानना है कि राजकीय प्रयोजनों में हिंदी की गति को तीव्र करने के लिए ये दोनों **आवश्यक परिस्थितियां (Necessary Conditions) हैं। इस दिशा में और गति देने के लिए शीर्ष नेतृत्व की प्रतिबद्धता और प्रयास पर्याप्त परिस्थितियां (Sufficient Conditions) हैं।**

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि प्रशासन में पारदर्शिता आए और आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके।मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन **बारह 'प्र'** को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत ;'सुदृढ़ आत्मनिर्भर भारत'** के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

अनुगूँज के आगामी अंक हेतु 'आपदा में अवसर - डिजिटल भारत' तथा 'वोकल फॉर लोकल- स्थानीय उद्यमों की भूमिका' विषय पर हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा; संस्कृत, सिंधी, उर्दू, कश्मीरी एवं नेपाली में सामग्री आमंत्रित है।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि "अनुगूँज" के आगामी अंक के लिए सामग्री हमें प्रेषित करें। यह सामग्री शाखा/कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों/कार्यक्रमों/बैठकों आदि के फोटोग्राफ एवं एक संक्षिप्त रिपोर्ट, ज्ञानवर्धक लेख, बैंक के उत्पाद एवं सरकारी योजनाओं से संबंधित लेख, ग्राहक की सफलता की कहानी, स्टाफ की सफलता की कहानी, शाखा की सफलता की कहानी आदि के रूप में भेज सकते हैं।

पाठकगण प्रकाशनार्थ सामग्री अपने व्यक्तिगत विवरण एवं एक पासपोर्ट आकार की फोटो के साथ राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय के ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in पर प्रेषित करें ।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्व : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का योगदान

डॉ. एस.के. पाटील
कुलपति - इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

रायपुर अंचल कार्यालय द्वारा यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रस्तुत व्याख्यान

एक ओर जहां 40 के दशक में भारत अपनी गुलामी की आखिरी सांसे गिन रहा था वहीं दूसरी ओर श्री घनश्याम दास बिड़ला द्वारा वास्तविक भारतीय बैंक की परिकल्पना गढ़ी जा रही थी। इसी तारतम्य में 6 जनवरी 1943 को **द यूनाइटेड कमर्शीयल बैंक लिमिटेड** की स्थापना हुई, जो विभिन्न बैंकों के राष्ट्रीयकरण 19 जुलाई 1969 के साथ भारत सरकार के स्वामित्व के दायरे में आया तथा **यूनाइटेड कमर्शीयल बैंक** के नाम से राष्ट्रीयकृत हुआ। फिर बाद में सन् 1985 में संसदीय अधिनियम द्वारा इसका नाम बदलकर **यूको बैंक** कर दिया गया। बार-बार नाम परिवर्तन के बावजूद **यूको बैंक** की अटूट विश्वसनीयता एवं प्रबल सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वाह क्षमता के कारण ग्राहकों का सौहार्द बैंक के साथ जुड़ा रहा। **यूको बैंक** का पंजीकृत एवं प्रधान कार्यालय कोलकाता में खोला गया जिसके प्रथम निदेशक मंडल में देश व समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व रहा। अपनी बेहतरीन कार्यशैली, प्रतिनिधित्व क्षमता एवं आर्कषक प्रतिबिम्ब के कारण देश व विदेश में अपनी 3 हजार से अधिक शाखाओं एवं सेवा केंद्रों के भौगोलिक विस्तार को लक्ष्य कर पाने में समर्थ रहा। सरकार की गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में पूरे दिल से प्रतिबद्धता जारी रही और राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (एसएलबीसी) को 1983 में ओडिशा और हिमाचल प्रदेश के लिए बैंक की जिम्मेदारी सौंपी गई। वित्त वर्ष 2016-17 में शाखा की संख्या 4000 से अधिक थी। यूको बैंक कृषि, उद्योग, व्यापार एवं वाणिज्य सेवा क्षेत्र, बुनियादी सुविधा जैसी अर्थव्यवस्था के सभी आयामों में सक्रिय वित्तीय सहभागिता के द्वारा वर्षों से राष्ट्र की समर्पित भाव से सेवा करते हुए बदलते परिवेश के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ रहा है।

देश के विकास और प्रगति में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। देश की आर्थिक एवं सामाजिक रुपरेखा का बहुत बड़ा मार्ग इसी पर टिका है। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है, यह न केवल देश की दो-तिहाई आबादी की रोजी-रोटी एवं आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन-शैली का आईना भी है। भारत में कृषि क्षेत्र, घरेलू मांग को पूरा करने के लिए बहुत अच्छा काम कर रहा है और कुछ श्रेणियों में खाद्यान्न का निर्यात भी कर रहा है। वर्ष 2017 की कुल मांग लगभग 235 मेट्रिक टन थी और कुल आपूर्ति 277.49 मेट्रिक टन थी। 2017 में ही नहीं, अगर आपको 2017 से पहले पिछले 5 साल का रुझान दिखाया जाए तो मांग से ज्यादा आपूर्ति दिखाई पड़ती है। यह स्पष्ट रुप से हमें बताता है कि भारत एक खाद्य अधिशेष देश है और मांग-आपूर्ति प्रक्रिया पर कोई वास्तविक दबाव नहीं है। बेहतर और आधुनिक कृषि तकनीक और प्रति हेक्टेयर उच्च उत्पादकता के कारण आपूर्ति मुख्य रुप से बढ़ रही है। पिछले 3 दशकों में भंडारण सुविधाओं में सुधार हुआ है और सस्ती कीमतों पर किसानों को वर्ष भर फसल को संरक्षित करने में मदद मिल रही है।

देश में खेती-बाड़ी के साथ पशुपालन, बागवानी मुर्गी पालन, मछली पालन, वानिकी, रेशम कीट पालन, कुक्कुट पालन व बत्तख पालन आमदनी बढ़ाने का एक अहम हिस्सा बनता जा रहा है। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों से प्राप्त होता है। देश के कुल निर्यात

में 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में ही लगी हुई है। किसी समय में आयात पर निर्भर रहने वाला भारत आज 27,568 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर रहा है। भारत गेहूँ धान, दलहन, गन्ना और कपास जैसी अनेक फसलों की चोटी के उत्पादकों में शामिल है। भारत इस समय दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सब्जी और फल उत्पादक देश बन गया है। देश में 2.37 करोड हेक्टेयर में बागवानी फसलों की खेती की जाती है जिससे ये 2016-17 में कुल 30.5 करोड़ टन बागवानी फसलों का उत्पादन हुआ है। भारत विश्व में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक है। भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत 16.5 करोड़ टन के साथ विश्व दुग्ध उत्पादन में 19 प्रतिशत का योगदान देता है। कुक्कुट पालन में भारत विश्व में सातवें स्थान पर है। अण्डा उत्पादन में भारत का चीन और अमेरिका के बाद विश्व में तीसरा स्थान है। देश में 6 लाख टन माँस का कुक्कुट उद्योग उत्पादन करता है। मुर्गी पालन बेरोजगारी घटाने के साथ देश को पौष्टिकता पढ़ाने का भी बेहतर विकल्प है। मौजूदा तौर पर भारत दुनिया का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। वर्तमान स्थिति की बात करें तो मछली पालन की देश के सकल घरेलू उत्पादन में करीब एक प्रतिशत की हिस्सेदारी है। वर्ष 2015-16 में मछलियों का कुल उत्पादन 108 करोड़ टन था। भारत में खेती-किसानी आज भी जोखिम भरा व्यवसाय है जिसमें सालाना आमदनी मौसम पर निर्भर करती है। खेती में बढ़ती उत्पादन लागत व घटते मुनाफे के कारण युवाओं का झुकाव भी खेती की तरफ कम होता जा रहा है। आज ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े स्तर पर युवाओं का शहरों की ओर पलायन हो रहा है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी व कम आमदनी की वजह से रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं। ऐसे में कृषि-आधारित व्यवसायों को रोजगार के विकल्प के रूप में अपनाया जा सकता है।

जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक वर्ष 2019 को अपने राष्ट्रीयकरण के 50 वें वर्ष के रूप में मना रहें हैं। वहीं दूसरी ओर एक बार फिर यह बहस तीखी हो चली है कि आखिर ये राष्ट्रीयकृत बैंक भारतीय अर्थव्यवस्था पर बोझ है या उसकी रीढ़ की हड्डी। इसी क्रम में भारत सरकार ने इन सरकारी बैंकों के मेगा मर्जर पर अपनी मुहर लगा दी है परंतु पूंजीवाद के पैरोकारों को इनके निजीकरण से कम कुछ भी मंजूर नहीं है। माना कि राष्ट्रीयकृत बैंकों में गवर्नेंस के स्तर पर भारी खामियां है व सुधार की व्यापक जरूरत है फिर भी विनिवेश व निजीकरण की हिमायती भीड़ में शामिल होने से पहले हमें कुछ बिन्दुओं पर गौर करना होगा।

1970 के दशक में बड़े पैमाने पर लिया गया बैंकों के राष्ट्रीयकरण का निर्णय केंद्र सरकार का भारत की आजादी के बाद का सबसे बड़ा आर्थिक निर्णय था जो देश की अर्थव्यवस्था के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ जिसने एक और सामान्य ग्रामीण व अर्धशहरी जनमानस को साहूकारों से मुक्ति दिलाकर अन्यायपूर्ण अनाधिकारिक आर्थिक कुचक्र से बाहर निकाला, वहीं दूसरी ओर घरेलू बचत हेतु प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीयकरण से पहले बैंक जहां “क्लास बैंकिंग” में व्यस्त थे, राष्ट्रीयकरण ने उन्हीं को “मास बैंकिंग”की तरफ मोड़ा व गरीब व पिछड़े जनमानस के दरवाजे पर दस्तक दी। चूंकि भारतीय अर्थव्यवस्था शुरुआत में विदेशी निवेश को आकर्षित करने में विफल रही, उस परिस्थिति में भारत का औद्योगीकरण इन्हीं सार्वजनिक बैंकों द्वारा प्रदत्त निधियों व वित्त से संभव हो सका। इसके साथ ही राष्ट्रीयकृत बैंकों ने राष्ट्रीय बचत के संग्रहण का काम भी बखूबी किया तथा ऋण-जमा अनुपात को संतुलित रख देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मुख्य भूमिका निभाई।

भारत व विदेश में समय-समय पर हुए आर्थिक अध्ययन बताते हैं कि जब-जब अर्थव्यवस्था में भगदड़ की स्थिति बनती है या मंदी के हालात में निवेशक एक-दूसरे की तरफ सन्देह की दृष्टि से देखते हैं तब यही राष्ट्रीयकृत बैंक निजी बैंकों के बजाए बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसका ताजा उदाहरण 2008 की आर्थिक मंदी से लिया जा सकता है, जब अमेरिका में लेहमन ब्रदर्स के दिवालिया होने पर भारतीय कारोबारी व आमजन भी संभावित खतरे को भांपते हुए अपना नकद व जमा संग्रहण निजी बैंकों से स्थानांतरित कर राष्ट्रीयकृत बैंकों में ले गए।

इसका मुख्य कारण प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इन बैंकों का बेहतर प्रबंधन रहा क्योंकि अति उदारवाद या यूं कहें अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से इन्होंने अपने पारंपरिक आर्थिक अनुशासन से समझौता नहीं किया। राष्ट्रीयकृत बैंक भारतीय जनमानस की आशाओं व आकांक्षाओं पर खरे उतरे हैं तथा निजी क्षेत्र के साथ कठिन प्रतिस्पर्धा में भी आम-जन के विश्वास पात्र रहें हैं। इसलिए बैंकिंग क्षेत्र की कुल बचत संग्रहण का करीब दो- तिहाई जमा राशि

इनके पास है। हालांकि ताजा हालातों में जमा व ऋण दोनों ही मापदंडो पर निजी बैंकों से इन्हें कड़ी चुनौती मिल रही है तथा इनका मार्केट शेयर तेजी से निजी बैंकों की तरफ स्थानांतरित हो रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में बढ़ती गैर निष्पादित परिसंपतियां जो कि मार्च 2019 में 8 लाख करोड़ (सकल एनपीए) के पार पहुँच गई, चिंता का विषय है जो कि निजी बैंकों से उनके सकल ऋण के अनुपात में तीन गुना से भी अधिक है।

जहां आजादी के पहले और आजादी के बाद दो दशकों तक कृषि क्षेत्र संसाधनों के अभाव से जूझ रहा था, और एक समय भी था जब खाद्यान के लिए भारत अन्य देशों पर निर्भर था वहीं बैंको के राष्ट्रीयकरण ने कृषि वित्त को सबसे दुर्गम इलाकों के किसानों के हितों के लिए उनके दरवाजे तक पहुंचाया। कृषि के लिए ऋण की भूमिका को केवल समर्थन के रूप में नहीं देखा जा सकता है, अपितु खाद्य-उत्पादक गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिससे समग्र आय और आर्थिक स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। किसानों की कृषि के रूप में राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए बुनियादी आवश्यकता है। व्यापक अर्थशास्त्र, भारत में कृषि और गैर-कृषि विकास के बीच संबंधों का विश्लेषण यह पुष्टि करता है कि खेत और ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि क्षेत्र एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। कृषकों की पीड़ा और गरीबी को कम करने के लिए सार्वजनिक बैंकों को ग्रामीण कृषि क्षेत्रों के विकास पर भी विशेष ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कृषि ऋण वास्तव में, कृषि और ग्रामीण की कृषि प्रक्रिया को सरल व सहज करने के लिए एक उत्प्रेरक /एजेंट है। जिसका मुख्य उदेश्य कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में ऋण प्रवाह में सुधार करना और समावेशी ग्रामीण विकास हासिल करना है जो देश में और जिलों के बीच असमानताओं की घटनाओं को काफी हद तक कम कर सकता है। सक्षम वातावरण बनाने के लिए नीतियों को लागू करना चाहिए। जिसमें क्रेडिट अवशोषण को बढ़ावा देना सम्मिलित है। सार्वजनिक, निजी और विदेशी निवेश को कृषि में निवेश की कमी की स्थिति को मापने और एक नकारात्मक सोच को बदलने में मदद करनी चाहिए।

माना कि भारतीय अर्थव्यवस्था थोड़ी दबाव में है तथा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भी इससे अछूते नहीं हैं, लेकिन अब समय आ गया है जब पब्लिक सेक्टर बैंकों को शासन के स्तर पर वृहद आत्मचिंतन की जरुरत है। जिसमें मानव संसाधन का उच्चतम स्तर का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक जैसे कि प्रबन्धकों को गलत वित्तीय निर्णय पर सजा निर्धारित है लेकिन बेहतर वित्तीय निर्णय पर कोई प्रोत्साहन नहीं है। सरकार के स्तर पर इन बैंकों को उचित स्वायत्ता दी जाए, गैर-व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इनके संसाधनों को कम से कम झोंका जाए तथा सजा व प्रोत्साहन का चलन शुरु हो। वर्तमान परिस्थितियां जहाँ सरकार का उद्देश्य भारत को ₹ 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनाने का है, ऐसे में यही सर्वोतम विकल्प है, निजीकरण बिल्कुल भी नहीं। क्योंकि निजीकरण व सामाजिक बैंकिंग दोनों का सहअस्तित्व नामुमकिन है क्योंकि निजीकरण का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है सेवा नहीं।

आत्मनिर्भर भारत को साकार करने में बैंकों का योगदान

रविशंकर नारायण
उप महाप्रबंधक
अंचल प्रबन्धक, बेंगलुरु

इसका मुख्य उद्देश्य है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के लाभ देश के गरीब नागरिक, श्रमिक, प्रवासी मजदूर, पशुपालक, मछुआरे, किसान, संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के व्यक्ति, काश्तकार, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, मध्यमवर्गीय उद्योग को मिले । जिससे 10 करोड़ मजदूरों को लाभ होगा, एमएसएमई से जुड़े 11 करोड़ कर्मचारियों को फायदा होगा, उद्योग से जुड़े 3.8 करोड़ लोगों को लाभ पहुँचेगा और वस्त्र उद्योग से जुड़े साढ़े चार करोड़ कर्मचारियों को लाभ पहुंचेगा

आत्मनिर्भर भारत अभियान द्वारा सरकार भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने हेतु प्रयत्नशील है।

इसका पहली बार सार्वजनिक उल्लेख 12 मई 2020 को किया गया था जब कोरोना महामारी सम्बन्धी एक आर्थिक पैकेज की घोषणा की गई थी । इसके तहत 20 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की गई जो देश की सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10 प्रतिशत है। इसका उद्देश्य अर्थव्यवस्था के सम्यक संचालन, संभावित घाटे की प्रतिपूर्ति एवं वित्तीय अनुशासन की स्थापना थी।

इस दिशा में उठाए गए ठोस कदम :

1. आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के कल्याण के लिए कुल 16-घोषणाएं की गईं ; गरीबों, श्रमिकों और किसानों के लिए अनेक घोषणाएं की गईं जिनमें किसानों की आय दोगुनी करने के लिए की गई 11 घोषणाएं भी शामिल हैं।

2. पैकेज का बहुत बड़ा हिस्सा बैंकिंग क्षेत्र द्वारा ऋण के रूप में देने की योजना बनाई गई जिसकी ऋण वापसी की गारंटी सरकार द्वारा दी जा रही है। कुछ क्षेत्रों में ब्याज दर में 2 प्रतिशत का भार सरकार वहन कर रही है|

3. आत्मनिर्भर भारत अभियान के पाँच स्तम्भ के रूप में अर्थव्यवस्था में प्रगति लाना, बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करना, प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक उपयोग , जनसांख्यिकी एवं मांग के अनुरूप वित्त पोषण प्रदान करना है।

4. हम सब को ज्ञात है कि आज भारत इस संक्रमण काल में पीपीई किट का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया और बाईपैप वेंटिलेटर का भी विकास किया गया।

5.भारत में कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई की दुकानें ,मोची , पान की दुकानें व कपड़े धोने की दुकानों पर गहरा असर पड़ा तब इनकी आजीविका के लिए प्रधान मंत्री स्वनिधि योजना लागू की गई जिसके अंतर्गत रेहड़ी पटरी वालों को 10,000 रुपए का ऋण मुहैया बैंकों द्वारा किया जा रहा है। स्ट्रीट वेंडर्स के लिए 5 हजार करोड़ रुपये की विशेष क्रेडिट सुविधा दी जा रही है।

इस योजना के अंतर्गत दी जा रही अल्पकालिक सहायता 10,000 रुपया छोटे सड़क विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरु करने में सक्षम बनाएंगे। इस योजना के ज़रिये भी आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति मिलेगी।

6. 14 मई, 2020 को घोषित आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत मुख्यतः गरीब, श्रमिक और किसानों के लिए जो घोषणाएं की गई हैं, उन्हें बैंकों द्वारा संभव किया जा रहा है। इसमें प्रत्यक्ष सहायता जो खाताधारकों के बैंक खाते में अनुदान के रूप में जमा की गई।

7. साथ ही विभिन्न ऋण योजनाएं जैसे किशोर , शिशु के माध्यम से भी उनके उद्योग की रक्षा हेतु कदम उठाए गए।

8. सीएलएसएस (सहायता प्राप्त ऋण योजना) के विस्तार के माध्यम से आवास क्षेत्र और मध्यम आय वर्ग को बढ़ावा देने के लिए 70 हजार करोड़ रु निर्धारित किया गया है और प्रधान मंत्री आवास योजना के द्वारा आवास हेतु ऋण सुविधा दी जा रही है जिसके लिए बैंकों को

प्रोत्साहित करने हेतु सरकार भी प्रतिभागिता कर रही है।

8. इतना ही नहीं ,नाबार्ड के माध्यम से किसानों के लिए 30 हजार करोड़ रुपये की अतिरिक्त आपातकालीन कार्यशील पूंजीगत निधि सुनिश्चित की गई है।

9. किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ढाई करोड़ किसानों को ऋण प्रदान किए गए।

10. इसी प्रकार सूक्ष्म खाद्य उद्यम का विकास , मछुआरों के लिए मातृ सम्पदा योजना,पशुपालन के बुनियादी ढांचे के विकास की योजना , मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने हेतु सहायता योजना , कृषि उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्रों के विकास हेतु बनाई गई सारी योजनाएँ बैंकों के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही हैं।

इसका मुख्य उद्देश्य है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के लाभ देश के गरीब नागरिक, श्रमिक, प्रवासी मजदूर, पशुपालक, मछुआरे, किसान, संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र के व्यक्ति, काश्तकार, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, मध्यमवर्गीय उद्योग को मिले। जिससे 10 करोड़ मजदूरों को लाभ होगा, एमएसएमई से जुड़े 11 करोड़ कर्मचारियों को फायदा होगा, उद्योग से जुड़े 3.8 करोड़ लोगों को लाभ पहुँचेगा और वस्त्र उद्योग से जुड़े साढ़े चार करोड़ कर्मचारियों को लाभ पहुंचेगा।

बैंकों की अतिरिक्त भूमिका बैंक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह लोगों की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने और रोजगार सृजन का बड़ा माध्यम है।

- कोरोना महामारी के कारण नुकसान की भरपाई के लिए लगभग 21 लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज की घोषणा की गई और बैंकों को आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए कहा गया है।
- घोषित पैकेज के तहत कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों, ग्रामीण क्षेत्र में किफायती आवास आदि के लिए अनेक प्रावधान हैं। नीतिगत उपायों के जरिये भी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने की पहल की गयी है।
- इन पहलों को कारगर बनाने की दिशा में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ने किसानों को जरूरी कई उत्पाद ऑनलाइन एवं सस्ती दर पर उपलब्ध करा रहे हैं| बैंक किसानों के लिए मंडी, मित्र और कृषि गोल्ड ऋण आदि की सुविधा भी उपलब्ध करा रहा है।मंडी के अंतर्गत किसानों की गैर बैंकिंग जरूरतों को पूरा किया जा रहा है तथा उन्हें बाजार उपलब्ध कराया जा रहा है, जहां किसान बिना किसी बिचौलिये के लेन-देन कर रहे हैं|
- बैंक ने किसानों को अन्य फोरम भी उपलब्ध कराया है, जिसके तहत वे बीज, उर्वरक, कृषि उत्पाद आदि सस्ती दरों पर खरीद रहे हैं। इससे जुड़े किसान इनकी खरीददारी के लिए बैंक से ऋण भी ले सकते हैं।
- यह मंच रियल टाइम बेसिस पर किसानों को बाजार में चल रहे फसलों के भाव, फसल प्रबंधन, फसल बीमा, कृषि तकनीकी समस्याओं का समाधान, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारियां भी उपलब्ध करा रहा है।
- किसान कृषि उपकरण खरीद रहे हैं।एग्रोस्टार भारत का पहला तकनीकी स्टार्टअप है, जो कृषि से जुडी समस्याओं का समाधान पेश करता है| इस पर मिस्डकाल या एप के जरिये किसान अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते हैं| इनके अलावा मौसम संबंधी जानकारियों को हासिल करने के लिए स्काइमेटवेदर मंच उपलब्ध है।
- बैंक छोटे और मझोले कारोबारियो को संपत्ति के एवज में ऋण, ग्रामीण क्षेत्र में पेट्रोल पंप डीलरों एवं अन्य डीलरों को ऋण, वेयरहाउस रिसीट पर ऋण अर्थात वेयरहाउस में रखे अनाज के बदले ऋण, दाल, चावल, चीनी, कपडा आदि मिलों के लिए ऋण, शिक्षा ऋण, दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए वैयक्तिक ऋण, ग्रामीण क्षेत्र में क्लिनिक खोलने के लिए डॉक्टर प्लस ऋण, स्कूल या महाविद्यालय खोलने के लिए ऋण आदि भी मुहैया करा रहे हैं।
- ग्रामीण कॉर्पोरेट टाई-अप के जरिये अपनी फसलों या कृषि उत्पादों को सीधे कॉर्पोरेट को बेच रहे हैं, जिससे उन्हें स्थानीय मंडी जाने की जरूरत नहीं होती है|उन्हें बिचौलियों से भी छुटकारा मिल जाता है।इससे किसानों के ढुलाई और भाड़े पर होने वाले खर्च बच रहे हैं।
- बैंक किसानों को जमीन खरीदने, एग्री क्लीनिक खोलने, पॉली हाउस बनाने, कंबाइंड हार्वेस्टर खरीदने, पशुपालन, मछलीपालन, मशरूम की खेती करने, कुक्कट पालन, सुअर पालन, हार्टीकल्चर, बकरीपालन, सेरीकल्चर, भेड़ पालन, मधुमक्खी पालन, ट्रैक्टर, पंपसेट व पाइपलाइन खरीदने आदि के लिए भी ऋण दे रहे हैं।
- कोरोना काल में प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हों, इसके लिए सरकार ने

शेष पेज 27 पर

आत्मनिर्भर भारत – बैंकों की भूमिका

अमित श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
अंचल प्रबन्धक, हैदराबाद

आत्मनिर्भर भारत अभियान को प्रभावी रूप देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए गए। बैंकों द्वारा पहले से ही लागू कई योजनाओं के साथ-साथ, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, एमएसएमई ऋण योजनाओं आदि के माध्यम से इस अभियान में कई ऐसे उद्योगों को जोड़ा गया जो एक तरफ़ रेलगाडी के डिब्बे बनाने, फ़ाइटर प्लेन बनाने और रक्षा उपकरण बनाने जैसे बृहत उद्योगों से संबद्ध हैं, तो दूसरी ओर छोटे-छोटे स्ट्रीट वेंडर्स, छोटे-मझोले किसान-उद्यमी, कारोबारी हैं।

आत्मनिर्भरता अर्थात स्वयं के लिए स्वयं पर निर्भर होना और स्वयं का काम करने में स्वयं समर्थ होना है। आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है, भारत अपनी जरूरत की सभी चीजों और कार्यों के प्रति स्व-निर्भर हो, स्व-सक्षम हो, आयातों पर निर्भर ना हो। स्वदेशी की विचारधारा वाले लोग मानते हैं कि हमारी जरूरतों की सारी चीज़ें स्वदेशी तौर पर निर्मित हो और हम इन्हीं स्वदेशी उत्पादों को खरीदें और देश को आत्मनिर्भर बनाएँ।

आजकल आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना अनायास ही, भारत के प्रधानमंत्री के 12 मई 2020 के वक्तव्य से जुड़ जाती है जब उन्होंने कोरोना विश्व-महामारी से लड़ने के लिए 20 लाख करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा की और देश को इस महामारी की विकरालता से उबारने के लिए महत्वपूर्ण बहुआयामी उपाय प्रस्तावित करते हुए विश्व को एक अभूतपूर्व दृष्टिकोण दिया। हम जानते हैं कि वर्ष 2020 की शुरुआत में ही इस महामारी ने सारे विश्व की अर्थव्यवस्था की नींव हिला दी थी। भारत इससे अछूता नहीं रहा। इस बीच यह मंत्र बहुत प्रभावशाली ढंग से उभरा कि **"भारत में, भारत और विश्व के लिए बनाओ।"** भारत की नीतियों ने विश्व के समक्ष यह उदाहरण पेश किया कि भारत किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए सक्षम है।

आदमी और आदमी के बीच दो गज की दूरी बनाए रखने की मजबूरी और भारत भर में लॉकडाउन के चलते महीनों तक घरों में बंद रहने की मजबूरी, अधिकांश उद्यमों के बंद हो जाने का कारण बनी। कोरोना के कारण भारत की अर्थव्यवस्था कमजोर हो चुकी थी, बेरोजगारी की समस्या, श्रमजीवियों का पलायन, जीवन को बचाए रखने की जद्दोजहद में त्रस्त सारा समाज, आर्थिक रूप से कमजोर होती सामाजिक व्यवस्था में इस 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज ने जान फूंकने का काम किया। गरीब नागरिक, श्रमिक, किसान, काश्तकार, प्रवासी मजदूर, लघु एवं कुटीर उद्योगों में काम करने वाले, मध्यमवर्गीय उद्योग, मछुआरे, पशुपालक, संगठित क्षेत्र तथा असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों उद्यमियों को इस आत्मनिर्भर भारत अभियान से जोड़ा गया। आर्थिक गतिविधियाँ बैंकों के माध्यम से ही आकार लेने लगीं।

यह आर्थिक पैकेज अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने के उपाय प्रतिष्ठापित करता है। आधारभूत सुविधाओं को तैयार करने, मांग और आपूर्ति में तालमेल बैठाने और उसे आकार देने का काम भी करता है। इसी बीच इस संकल्पना ने भी जोर पकड़ा कि स्थानीय चीजों के लिए हमें खुल कर बोलना है, **लोकल के लिए वोकल** होना है। स्थानीय उत्पादों की खरीदारी करके अपने को आत्मनिर्भर बनाना है। जाहिर है इससे हर किसी को लाभ मिला है, स्वदेशी उत्पादों के निर्माण और उपभोग के नए-नए रास्ते भी खुले हैं।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि बैंक अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। बैंक रोजगार सृजन का सबसे कारगर माध्यम है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, बैंकों के माध्यम से ही अमल में लाया जाना था अतः

भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार, आत्मनिर्भर भारत योजना के बहुमुखी वित्तीय पैकेज के क्रियान्वयन में बैंक महत्वपूर्ण निभा रहे हैं। बैंकों ने सरकार के निर्देशों के अनुसार, पहले से मौजूद ऋणों के चुकतान में, इनकी चुकतान अवधि में राहत दी, ऋणों की पुनःसंरचना तथा अतिरिक्त-वित्तपोषण की सुविधा दी। सरकार ने एमएसएमई की परिभाषा को व्यापक रूप दिया, विशिष्ट ऋणों के लिए अपनी ओर से गारंटी का प्रावधान किया, वित्तीय सहायता को विस्तार दिया, दबावग्रस्त एमएसएमई इकाइयों के लिए सबॉर्डिनेट ऋण की व्यवस्था की, निधियों की निधि के माध्यम से एमएसएमई के लिए इक्विटी का प्रावधान किया, ग्लोबल टेंडर्स पर प्रतिबंध लगाया और अनेक ऐसे उपाय किए जिससे कि भारत की अर्थ-व्यवस्था पटरी पर आ जाए। बैंक इन सारे प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए उधारकर्ताओं की ज़रूरतों को पूरा करने की कार्रवाई कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा अर्थ-व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए इस बीच लगातार विभिन्न योजनाएं लाई गईं, भारतीय रिज़र्व बैंक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और ग़ैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों ने इन योजनाओं के क्रियान्वयन में भागीदारी सुनिश्चित की। आत्मनिर्भर भारत अभियान को प्रभावी रूप देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न लक्ष्य निर्धारित किए गए। बैंकों द्वारा पहले से ही लागू कई योजनाओं के साथ-साथ, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, एमएसएमई ऋण योजनाओं आदि के माध्यम से इस अभियान में कई ऐसे उद्योगों को जोड़ा गया जो एक तरफ़ रेलगाडी के डिब्बे बनाने, फ़ाइटर प्लेन बनाने और रक्षा उपकरण बनाने जैसे बृहत उद्योगों से संबद्ध हैं, तो दूसरी ओर छोटे-छोटे स्ट्रीट वेंडर्स, छोटे-मझोले किसान-उद्यमी, कारोबारी हैं, पशुपालन, मछली पालन, कुक्कुटपालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती करने वाले, चीनी मिलें, कपड़ा मिलें, चिकित्सक, शिक्षण संस्थान, ग्रामीण क्षेत्र में काम कर रही विभिन्न इकाइयाँ भी इस अभियान का लाभ उठा रही हैं। भारत सरकार की नीतियों से उधार-प्रवाह में वृद्धि दर्ज हुई है। कोरोना महामारी से लॉकडाउन के कारण नाई, मोची, रेहड़ी-पटरी पर अपनी आजीविका अर्जित करने जैसे सैकड़ों प्रकार के उद्यमियों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है। इस समस्या को दूर करने के लिए प्रधानमन्त्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत इन्हें लघु-ऋण मुहैया कराए जा रहे हैं जो छोटे-छोटे कारोबारियों को अपना काम फिर से शुरु करने में मदद कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा ऋण योजना सहित अनेक सरकारी योजनाओं के अधीन ऋण प्रदान करके बैंक भारत सरकार की अत्यधिक महत्वाकांक्षी योजनाओं और लक्ष्यों को पूरा कर रहे हैं, विशेष रुप से महिलाओं और अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछडे वर्ग के उद्यमियों, किसानों को ऋण देने में और उन्हें रोजगार से जोड़ने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिसके परिणामस्वरुप, कोविड-19 के कारण प्रभावित अर्थ-व्यवस्था को सुधारने में अत्यधिक मदद मिली है। बैंकिंग प्रणाली से जुड़े, भारत के समस्त नागरिकों को इस पैकेज से जोड़ने की योजना पर अमल हुआ। वित्त-पोषण को आसान बना कर लोगों को बैंकों से जोड़ा गया, बैंक से मिलने वाले लाभों को सुलभ बनाया गया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान मूलतः वैश्विक महामारी कोविड की भयावहता के ख़िलाफ़ खड़े होने के इरादे से उपजी, भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसे बैंकों के माध्यम से लागू किया जा रहा है। वृहद वित्तीय पैकेज के माध्यम से भारत की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने का यह एक प्रभावशाली मास्टर प्लान है। इस योजना के समक्ष अनेक चुनौतियाँ होने के बावजूद, भारत के वैश्विक ताकत के रूप में उभरने की संभावना है। यह योजना, देश के हर वर्ग के नागरिक के सशक्तीकरण के लिए, देश की समस्याओं का समाधान करने के लिए और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करने के लिए कारगर उपाय प्रस्तावित करती है। भारत की बैंकिंग व्यवस्था देश की 130 करोड़ की जनसंख्या की आशाओं-अपेक्षाओं को पूरा करने में पूरी निष्ठा और लगन के साथ अपना योगदान दे रही है, सरकार की नीतियों को अमलीजामा पहना कर इसे सुंदर आकार देने का और नए भारत का निर्माण करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है। भारत सरकार की योजनाओं और बैंकिंग जगत के श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के तालमेल को देखते हुए हम आशा कर सकते हैं कि निकट भविष्य में, भारतीयों की समस्त ज़रूरतों के गुणवत्तापूर्ण सामान यहीं बनने लगेंगे, यहीं उनका उपभोग भी होगा और भारत समृद्धि को और आत्मनिर्भरता को नया अर्थ देगा, विश्व के समक्ष एक नई मिसाल कायम करेगा।

अ

यश मंगल
मुख्य प्रबंधक - संकाय
क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र, जयपुर

प्रधानमंत्री ने जब इस शब्द आत्मनिर्भर प्रयोग किया तो बताया कि भारत पहले से ही ज्ञान के स्तर पर सदा से विश्वगुरु रहा है और अब समय आ गया है कि भारत को उत्पादन और सेवाओं के स्तर पर भी विश्वगुरु की भूमिका निर्वहन करनी चाहिए और अब यह पूरी दुनिया ने देखा भी है कि कैसे भारत ने अपनी आंतरिक समस्याओं और इस बीमारी से जूझते हुए भी समस्त मित्र देशों को जरुरत के समय चिकित्सीय उपकर जैस वेंटिलेटर्स एवं दवाएं निर्यात की थी, इसी को आत्मनिर्भरता कहा जाता है कि किसी भी उत्पाद का उत्पादन इतना हो कि आप खुद की जरुरत भी पूरा कर सकें और समस्त मानव जाति के कल्याण के लिये भी उपलब्ध करवाएँ।

कार्यपालक विमर्श – आमुख लेख

आत्मनिर्भर भारत – बैंकों की भूमिका

“आत्मनिर्भर भारत” जब भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री ने दिनांक 12 मई 2020 को आर्थिक पैकेज की घोषणा करते हुए इस शब्द का उपयोग किया तब प्रत्येक भारतवासी को एकबारगी तो लगा ही नहीं कि प्रधानमंत्री के ये कथन सत्य भी हो सकते हैं लेकिन आज जब हम करीब 6 महीने बाद इन कथनों की समीक्षा करते हैं तो पाते हैं कि न केवल प्रत्येक उद्यमी ने इस बात को साबित करने की पुरजोर कोशिश की है बल्कि हर एक व्यक्ति बैंकों के साथ मिलकर इस मिशन में अपना सर्वस्व अर्पण करके दिखाना चाहता है और भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री को सही साबित करना चाहता है।

सर्वप्रथम हम ये जान लें कि एक सामान्य नागरिक के लिए **“आत्मनिर्भर”** शब्द के क्या मायने है। बहुत सारे लोगों को लगा कि इसका मतलब “अंतर्राष्ट्रीय आयात को खत्म कर देना” ही आत्मनिर्भर है। जबकि कुछ आम व्यक्तियों की नजर मे“खुद कमाओ और खुद खाओ और सरकार से कुछ उम्मीद ना रखो”का भावार्थ भी झलकता है। परंतु वास्तविकता मे इसका अर्थ कहीं विशाल और विस्तृत है।

प्रधानमंत्री ने जब इस शब्द आत्मनिर्भर प्रयोग किया तो बताया कि भारत पहले से ही ज्ञान के स्तर पर सदा से विश्वगुरु रहा है और अब समय आ गया है कि भारत को उत्पादन और सेवाओं के स्तर पर भी विश्वगुरु की भूमिका निर्वहन करनी चाहिए और अब यह पूरी दुनिया ने देखा भी है कि कैसे भारत ने अपनी आंतरिक समस्याओं और इस बीमारी से जूझते हुए भी समस्त मित्र देशों को जरुरत के समय चिकित्सीय उपकरण जैस वेंटिलेटर्स एवं दवाएं निर्यात की थी, इसी को आत्मनिर्भरता कहा जाता है कि किसी भी उत्पाद का उत्पादन इतना हो कि आप खुद की जरुरत भी पूरा कर सकें और समस्त मानव जाति के कल्याण के लिये भी उपलब्ध करवाएँ। कबीर दास जी के शब्दों मे -

“साईं इतना दीजिये, जा मे कुटुम समाये ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए”॥

इसी क्रम मे भारत के सभी बैंकों ने भी अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है चाहे बात “प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना” की हो या फिर “प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना” की हो, भारत के सभी बैंकों ने 70 दिनों से अधिक के लॉकडाउन मे जब प्रत्येक भारतवासी अपने घरों से निकलने में भी डर रहा था उन्हीं परिस्थितियों में सभी बैंको के लाखों कर्मचारियों ने न केवल अपने कर्तव्य का निर्वहन पूरे समय किया अपितु प्रधानमंत्री जी द्वारा घोषित उपरोक्त योजनाओं के अलावा सूक्ष्म लघु एवं मध्यम श्रेणी की औद्योगिक इकाइयों को भी अधिकाधिक अतिरिक्त ऋण सुविधा उपलब्ध करवाने का कार्य किया । अभी भी प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के माध्यम से सभी स्ट्रीट वेंडरों को 10000 रुपए की आर्थिक सहायता ऋण के रुप मे लगातार पहुंचाई जा रही है।

विभिन्न सामाजिक प्रचार माध्यमों जैसे ट्विटर, व्हाट्सएप, फेसबुक पर भी इस संदर्भ कई सामाजिक संगठनों ने सभी आर्थिक योजनाओं के लाभार्थियों से भी उचित सामाजिक दूरी बनाते हुए अपना बैंकिंग लेनदेन करने की अपील की थी । जहां एक ओर अप्रैल मई एवं जून के महीने में सारी सड़कें, मॉल्स , शॉपिंग सेंटर , सब्जी मंडी , कई निजी एवं सरकारी दफ्तर

तपती हुई दुपहरी मे लॉकडाउन के कारण सूने पड़े रहते थे वहीं दूसरी ओर सभी बैंकों की शाखाएँ सभी लाभार्थियों को 500-500 रुपये की किश्तें बांटने में लगी हुई थी।

विश्व के मशहूर उद्योगपति एवं दानदाता बिल गेट्स ने भी कोविड से लड़ाई में भारत के प्रयासों की सराहना की है एवं समस्त विश्व इस लड़ाई में भारत को एक नेतृत्वकर्ता की तरह से देख रहा है जिसने अपनी आंतरिक विशाल जनसंख्या, भूभाग, सांस्कृतिक विभिन्नता, भाषायी विविधता एवं ग्रामीण गरीब परिवेश एवं अशिक्षित बहुतायत वाले लोग होने के बाद भी इस बीमारी पर काफी हद तक नियंत्रण किया हुआ है एवं सभी भारतीय बैंक मिलकर भारत की अर्थव्यवस्था के साथ साथ जन कल्याण हेतु निरंतर रुप से बिना थके कार्य कर रहे हैं। अतएव ये कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि कोविड के खिलाफ इस लड़ाई में सभी बैंक कर्मचारियों ने भी अपना कोविड योद्धा के रुप में सर्वस्व न्योछावर किया है और हम में से कई कोविड योद्धा अपने कर्तव्य पालन के दौरान वीर गति को भी प्राप्त हुए हैं।

अभी हाल ही में भारत की वित्त मंत्री ने आत्मनिर्भर पेकेज 3.0 की घोषणा करते हुए कई योजनाओं को जैसे कि “कोविड संबंधी तनाव आस्तियों का देर से भुगतान करने के लिए पुनर्योजीकरण” एवं “गारंटीशुदा आपात क्रेडिट ऋण”को भी मार्च 2021 तक बढ़ा दिया गया है इस संबंध मे हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भारत के सभी बैंक इस अवसर का लाभ भरपूर उठायेंगे एवं भारत की अर्थव्यवस्था को इन विपरीत हालातों से निकालने में निर्णायक भूमिका अदा करेंगे।

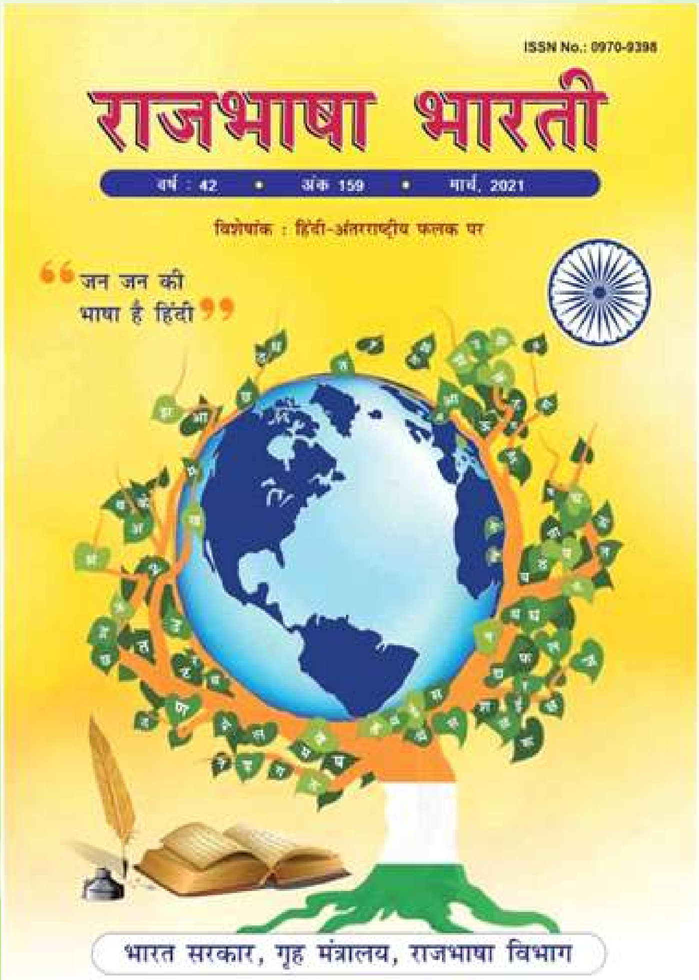

“राजभाषा भारती” संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका है, जिसे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका का प्रथम अंक अप्रैल, 1978 में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रथम सचिव **श्री रमाप्रसन्न नायक** के कार्यकाल तथा **श्री राजमणि तिवारी** के संपादन में प्रकाशित हुआ था। यह पत्रिका न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन संपूर्ण संघ सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/कार्यालयों आदि में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है।

सभी यूकोजनों से अनुरोध है कि आप सभी “राजभाषा भारती” में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित आलेख को अवश्य पढ़ें जिससे आप अपना ज्ञानार्जन कर सकें तथा इस पत्रिका में बैंकिंग, वित्त, आर्थिक एवं अन्य संबंधित विषयों पर अपने आलेख भी भेजें।आप अपने आलेख यूनिकोड हिंदी में टाइप कर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को ई-मेल के माध्यम से भेजें।

राजभाषा भारती पत्रिका को राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

डॉ.शिल्पी शुक्ला
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, कानपुर

हमें अपने भाषायी माध्यम को भी मजबूत करना होगा। इसके लिए भाषा का निरंतर प्रयोग करना होगा, अपनी भाषा का महत्व अगली पीढ़ी को बताना होगा। भले ही हमें अंग्रेजी का प्रयोग अनेक स्थानों पर करना पड़ता है, इसकी जानकारी होना भी आवश्यक है।परंतु राजभाषा हिंदी और अपनी मातृभाषा पर हमें गर्व का अनुभव करते हुए इनके प्रयोग पर जोर देना चाहिए। भाषा वह माध्यम है जो आमजन को आपस में जोड़ती है। यह वास्तव में हमारी संस्कृति की संवाहक है।

सांस्कृतिकी

सांस्कृतिक संकट और हमारा दायित्व

'संस्कृति' शब्द अपने आप में अत्यंत व्यापक है इसमें मनुष्य के जीवन के अनेक पक्ष समग्र रूप से जुड़े हुए हैं। 'संस्कृति' किसी भी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों के आचार व्यवहार, जीवनशैली, उनकी धर्मिक परंपराएं, मान्यताएं, विचारशीलता, वैज्ञानिक प्रगति आदि से मिल कर बनती है। ये सभी घटक किसी भी सभ्य समाज के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं।

रेडफील्ड के अनुसार 'संस्कृति कला और उपकरणों में जाहिर परंपरागत ज्ञान का वह संगठित रूप है जो परंपरा के द्वारा संरक्षित होकर मानव समूह की विशेषता बन जाता है'।

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार – 'संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं'।

संस्कृति केवल मानव समाज में ही पाई जाती है जिसे मनुष्य पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करता रहता है। जबकि अन्य पशु-पक्षी केवल व्यवहार सीखते हैं। हालांकि सामाजिकता अनेक प्राणियों में भी पाई जाती है परंतु ये प्राणी परंपराओं का निर्वाह नहीं कर सकते हैं। संस्कृति का परिष्कार प्रत्येक नई पीढ़ी के साथ ही होता जाता है। संस्कृति हमें मर्यादित जीवन का पाठ पढ़ाती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है जो हमें पूरे विश्व को एक परिवार की दृष्टि से देखने की प्रेरणा देती है। इसमें त्याग को जीवन के लिए अनिवार्य माना गया है। असत्य और अहिंसा पर आधारित होने के कारण भारतीय संस्कृति पूरे विश्व के प्राणियों के समान विकास एवं आपसी सौहार्द की बात करती है। आज भी एक आम भारतीय परिवार में अनेक परंपराओं का पालन हम देखते हैं। ग्रामीण परिवेश के लोग अनेक तीज त्यौहारों में वही परंपराएं निभाते हुए दिखाई देते हैं जो उन्होंने अपने पुरखों से पाई है।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है और इसका प्रभाव हमें हमारी संस्कृति पर भी पड़ता हुआ साफ दिखाई दे रहा है। आज पूरा विश्व सूचना प्रौद्योगिकी में हुए महाविस्फोट के कारण आपस में जुड़ चुका है। हम घर पर बैठे ही दुनिया के किसी भी कोने में घटित होने वाली खबरों को तुरंत जान सकते हैं। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार व्यवहार से परिचित भी हो रहे हैं। इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि तो हुई है, हम पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक और सजग हुए हैं, पर धीरे-धीरे हम अंधानुकरण की दौड़ में भी शामिल होते जा रहे हैं। वैसे भी उपनिवेशवाद ने हमारे देश की संस्कृति को बुरी तरह प्रभावित किया था। परंतु उस समय हमारा आम जन काफी हद तक अपनी परंपराओं से जुड़ा था। वह अपनी परंपरा और अपनी संस्कृति को अपनी थाती समझता था। केवल अंग्रेजी जीवन शैली की ओर आकृष्ट तबका ही आधुनिक होने की दौड़ में शामिल था। यहां यह कहना भी समीचीन होगा कि आधुनिक होना किसी भी प्रकार से गलत नहीं हैं। हमें समय के साथ चलना ही होगा परंतु आधुनिक होने के लिए हमें अपनी संस्कृति से समझौता करना पड़े, उसे छोड़ कर एक अंधी दौड़ में हम शामिल हो जाएं, यह उचित नही है।

दरअसल संस्कृति और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। बिना संस्कृति और संस्कारों के विकास न तो संभव है और न ही समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। दुनिया की किसी भी सभ्यता पर नजर

डालें तो यह स्पष्ट हो जाता है। महान से महान सभ्यता भी यदि समय के साँचे के अनुरूप नहीं चली तो समय ने उसके चिन्ह ही मिटा दिए। यूनान, मिश्र, रोम, मेसोपोटामिया जैसे अनेकों उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी संस्कृति और विकास के बीच संतुलन नहीं बनाया वो विलुप्त हो गए जबकि भारत और चीन जैसी संस्कृति समय के साथ आगे बढ़ती रही और आज भी समूचे विश्व को दिशा दे रही हैं।

हमें गर्व होना चाहिए कि हम उस भारत भूमि में जन्मे, जो दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता का केंद्र रहा है। हमारी संस्कृति आदिकाल से चली आ रही है और आज भी समूची मानवता के लिए अनुकरणीय है। विकास की अंधी दौड़ के बीच दुनिया के सबसे विकसित देश आज पृथ्वी की सुरक्षा के लिए जिन सिद्रांतों और जीवन शैली को अपनाने की बात कहते हैं वो हम हजारों वर्षों से अपनी दिनचर्या में ढालते आए हैं। धरती को नष्ट होने से बचाने के लिए प्राणी मात्र से प्रेम, पर्यावरण की रक्षा, विश्व बंधुत्व, 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' जैसे मंत्र का अनुसरण आज पूरी दुनिया कर रही है। ये मंत्र हमारी संस्कृति में रचे बसे हैं।

अगर हम आज के कोरोना महामारी के दौर को ही ले लें तो पाएंगे कि एक वायरस ने समूची दुनिया के विकास को न सिर्फ बाधित किया बल्कि मानव के अस्तित्व पर भी संकट खड़ा कर दिया। इस महामारी से आज भी समूची दुनिया जूझ रही है और निदान की तलाश में संघर्षरत है। ऐसे में इस बीमारी से मुकाबले के लिए जिन नियमों और उपायों को अपनाया जा रहा है वो प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति का हिस्सा हैं। जैसे शारीरिक दूरी, हाथों की सफाई, रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए आयुर्वेद का प्रयोग, पर्यावरण को स्वच्छ रखना दुनिया की प्राथमिकता हो गई है। इस महामारी ने सांस्कृतिक- पारंपरिक मूल्यों के साथ विकास और विज्ञान को भी चुनौती दी। इस समय जहां मानवता की रक्षा के लिए सटीक वैक्सीन जरूरी है वहीं नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाकर हम मानसिक रूप से इस महामारी पर विजय प्राप्त कर रहे हैं।

जहां एक ओर विश्वपटल पर हमारी संस्कृति के महत्व को स्वीकारा जा रहा वहीं दूसरी ओर हमारी युवा पीढ़ी इससे दूर होती जा रही है। युवा पीढ़ी स्वयं को आधुनिक कहलाना पसंद करती है। उसे अपनी पुरातन परंपराओं का पालन करना कहीं न कहीं गंवार होने का बोध कराता है। इससे वे पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति को ही अपनाने की अंधी दौड़ में शामिल हैं। वैसे भी बढ़ते बाजारवाद ने हर एक चीज की कीमत निर्धारित कर दी है और मल्टीनेश्नल कंपनियों ने हमारी युवा पीढ़ी के मस्तिष्क पर कब्जा किया है। मस्तिष्क पर कब्जा हो जाने पर व्यक्ति की सोच और मानसिकता में परिवर्तन हो जाता है। उसके आचार विचार भी उसी प्रकार से परिवर्तित हो जाते हैं जैसा कि दूसरे चाहते हैं।

अगर हम चाय का ही उदाहरण लें तो हम सब जानते हैं कि चाय की आदत हम भारतीयों को ब्रिटिश काल में ही लगाई गई थी। हमारे मस्तिष्क में आंग्ल नस्ल के श्रेष्ठ होने की बात डाली गई जिसके कारण हम आज भी पाश्चात्य रीतियों का अनुकरण करने में अपनी श्रेष्ठता समझते हैं। हमारी आज की पीढ़ी अपनी भाषा बोलने में गर्व का अनुभव नहीं करती। समाज में अंग्रेजी भाषा बोलने को शिक्षित होने का पैमाना समझा जाता है।

यह हमारे लिए अत्यंत चिंताजनक है कि भाषा, जो कि किसी भी देश की धर्म और संस्कृति की वाहक होती है, उसे उसके ही देशवासियों द्वारा हीन दृष्टि से देखा जाए। हमारे समाज की मनोवृत्ति इस प्रकार की होती जा रही है कि हमारी युवा पीढ़ी हिंदी या अपनी मातृभाषा न आने पर शर्मिंदगी का अनुभव नहीं करती बल्कि अंग्रेजी न आने पर स्वयं को नीचा अनुभव करती है। किसी भी देश की संस्कृति पर चोट करने के लिए सबसे जरूरी है उसके भाषायी माध्यम पर चोट करना। यही हम भारतीय आज भी झेल रहे हैं।

हमारे देश में असंख्य त्योहार हैं पहले सभी घरों में इन त्योहारों को परंपरा के अनुसार मनाया जाता था फिर कुछ त्योहारों और उनमें निभाई जाने वाली रस्मों को संक्षिप्त रूप में निभाया जाने लगा। अब महानगरों में वे त्योहार कम ही मनाए जाते हैं। हमारी वे परंपरागत रस्में धीरे-धीरे ग्रामांचल में ही सिमटती जा रहीं है। आज की पीढ़ी की आपाधापी भरी जीवन शैली में उन रस्मों के लिए कोई स्थान शेष नहीं है।

हमारे घरों में अब मां, मॉम और पिता, पाप्स होते जा रहे हैं ।पाश्चात्य संस्कृति में रमे बच्चे को देख कर हम स्वयं भी प्रफुल्लित होते हैं। हम यह नहीं सोचते कि

यह ह्रास हमारे समाज और प्रत्येक परिवार को पतन की ओर ही ले जा रहा है। हमारे संयुक्त परिवार वैसे ही विघटित होकर एकल परिवारों में परिविर्तित हो चुके हैं। इसके साथ ही साथ समाज में व्यक्तिवादी सोच पनपी है जो सिर्फ 'मैं' पर केंद्रित है इसमें 'हम', 'हमारे' के लिए स्थान नहीं है। जबकि हमारी परंपरा तो सबको अपना मानने और सबके कल्याण की कामना करने की है।

अब प्रश्न ये उठता है कि हम अपने इस सांस्कृतिक विघटन को किस प्रकार रोक सकते हैं। यदि हम अपनी संस्कृति के वृक्ष को हरा भरा रखना चाहते हैं तो हमें बेहद सजग होकर अपने बच्चों की परवरिश करनी होगी। हमें उन्हें उनके बाल्यकाल से ही अपनी सांस्कृतिक धरोधर, हमारी परंपराओं, मनुष्य के आपसी संबंधों के बारे में बताना होगा। अपनी सांस्कृतिक विरासत की वैज्ञानिकता को उन्हें बताना होगा। हमारी युवा पीढ़ी को अनकी जड़ों से जोड़े रखने के लिए उन्हें आधुनिक जीवनशैली और अपनी परंपराओं के निर्वहन के मध्य सामंजस्य रखने की सीख देनी होगी। हमारे शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं विस्तृत व्याख्या होनी चाहिए। हमें स्वयं अपनी जड़ों से जुडे रहना होगा और अपने आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना होगा। अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए शिक्षा से बेहतर कोई भी माध्यम नहीं है। हमें अपने भाषायी माध्यम को भी मजबूत करना होगा। इसके लिए भाषा का निरंतर प्रयोग करना होगा, अपनी भाषा का महत्व अगली पीढ़ी को बताना होगा। भले ही हमें अंग्रेजी का प्रयोग अनेक स्थानों पर करना पड़ता है, इसकी जानकारी होना भी आवश्यक है।परंतु राजभाषा हिंदी और अपनी मातृभाषा पर हमें गर्व का अनुभव करते हुए इनके प्रयोग पर जोर देना चाहिए। भाषा वह माध्यम है जो आमजन को आपस में जोड़ती है। यह वास्तव में हमारी संस्कृति की संवाहक है।

हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को पहचानें और इसकी संवर्धन करते हुए इसको अपनी नई पीढ़ी को हस्तांतरित करें। अ

स्मृति आधारित अनुवाद टूल - "कंठस्थ" - पर राष्ट्रीय कार्यशाला

यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में नई दिल्ली अंचल कार्यालय द्वारा दिनांक 23.12.2020 को "स्मृति आधारित अनुवाद टूल - कंठस्थ" पर ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में **श्री बी एल मीना,** निदेशक – तकनीकी, कार्यान्वयन एवं सेवा, राजभाषा विभाग, भारत सरकार उपस्थित थे । कार्यक्रम की अध्यक्षता **श्री नरेश कुमार,** महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं राजभाषा ने की । संकाय सदस्य के रूप में **श्री राजेश श्रीवास्तव**, उप निदेशक, राजभाषा एवं तकनीकी तथा **श्री दीपक कुमार**, निरीक्षक ने कंठस्थ पर बहुत सुंदर तरीके से प्रशिक्षण प्रदान किया जिसमें देश भर के सभी राजभाषा अधिकारियों ने प्रतिभागिता की।

कविताई

"बसन्त आ रहा है........"

ओंकार राम टाक
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोधपुर

बसन्त आ रहा है........
मुख-फूल, कामुक ब्यार, केश लताएँ ,
ओढ पीताम्बर बसन्त आ रहा है .....

पतझड़ का प्रेम, पतझड़ के ये विलास ?,
जन्म-जन्मांतर नहीं मिलने की आशा,
कर समर्पित अपना अस्तित्व,
लेकर मिलने की अभिलाषा,
बसन्त आ रहा है .....

मंद,सुगन्धित,मदहोश ब्यार,
सूखे पत्ते उड़ा गीत गुनगुना रही है,
गिरते पत्ते सा इठलाता...
बसन्त आ रहा है .....

नग्न पेड़ टहनियाँ फैलाये,
लालायित लटकती लता मुँह उठाये,
चहुं दिशा मनमोहक रंग फैलाये,,,
बसन्त आ रहा है .....

देख बसन्त, पतझड़ की प्रीत समझ आई,,
क्यूँ पतझड़ ने खुद को मिटा ये रीत निभाई
बैठ किनारे ताकने से नहीं,
उस अन्तिम पत्ते के गिरने पर ही बसन्त ऋतु आई॥

पतझड़ की मौत मिट्टी मे दफ़न हो गई,
एक मिट कर, एक जन्म दे गई,
पतझड़ के होने से ही ,
ऋतुराज "बसन्त" ऋतु अवतरित हो पायी ॥

प्रफुल्लित हवा, पवित्र प्रकृति,
केश लता लटकाये, भाल फूलों का टीका।
देव रमणीक स्वर्ग धरा से,
हाथ वीणा सजाये, आई है सदा वंदिता॥

प्रकृति को प्रीत लगे,
हर प्राणी को प्राणदाय,
सबके मन शीतल करे,
जग को उल्लासमय॥
बसन्त आ रहा है ...

कोयल की कुंक से गदगद पेड़ यूं कह जाए,
हर दुःख रिते सुख मिले।
पतझड़ के समर्पण बिना,
बसन्त कैसे लहराये ॥
बसन्त आ रहा है ....

संजीत कुमार झा
वरिष्ठ प्रबंधक
बहादुरपुर, दरभंगा शाखा

नबका बसात

"आइ झंझारपुर बजार मे बहुत दिनक बाद माधव झा भेटल छलाह। भेंट होइतहिँ ओ सुरु भए गेलाह अपन आन्तरिक गप्प बँटबामे। जेना-तेना छुटकारा भेटल आ हम अपनामे लगलहुँ। मुदा हुनक कहल बहुतो रास बात एखनहुँ घुरिया रहल अछि। बेरि-बेरि मोन पड़ि जाइछ माधव झाक व्यथा। माधव झाक बेटा विवेक मध्यम कोटिक छात्र छल, मुदा रहए मेहनतिआ आ तैँ ओकर आकांक्षा रहैक जे इंजीनियर बनी। माधव झा सेहो मध्यम आयक लोक, मुदा सन्तानक आकांक्षाकेँ पूरा करबाक लेल अपनाभरि प्रयास करैत रहनिहार। समाजमध्य बसात तेहन बहि रहल छैक जे जत-तत अर्थक काज। तैओ ओ अपना लेखें एहि प्रयास मे हरदम लागल रहैत छलाह जे जेना-तेना बेटाक आकांक्षा पूरा होइक।

मोन पड़ैत अछि जखनि इंजीनियरिंग पढ़ाईक जाँच-परीक्षा परिणाम आयल रहैक आ हमहीं हुनक पुत्रक रिजल्ट देखने रहिअनि, ओ परिणाम सूनि निराश भए गेल रहथि, कारण विवेकक पोजीशन बड्ड निम्न स्तरक छलैक। परिणामक हिसाबें ओकर एडमिशन कोनो नीक इंजीनियरिंग कॉलेजमे आ मनोनुकूल प्रभाग भेटबाक सम्भावना बहुत कम रहैक। हम कहने रहयनि जे- औ जी आइ-काल्हि सभ गोटा अपन सन्तानकेँ इंजीनियरे बनएबामे व्यस्त छथि, हमरा जनैत किछु दिनमे ओकर हाल ठीक नहि रहतैक। तैँ अपन पुत्रकेँ प्रतियोगिता परीक्षाक हेतु तैआर करु आ सम्प्रति कॉमर्स रखबाक हेतु कहिऔक। हमर गप्प सुनि माधवजी तँ सहमत भेलाह मुदा पुत्रक आकांक्षा ओ नहि तोड़य चाहैत छलाह। एहि बीच पुत्र सेहो दिल्लीसँ परीक्षा द घुमि आयल रहनि, कारण जे आब तँ एडमिशनक बेर भ गेल छलैक।

ई कथा ओ माधव झा कैं सेहो कहलक, संगहि इहो जे काल्हि हम मुजफ्फरपुर जायब, जतए ओकरा कॉनसिलींग मे बजौने छैक। प्रातः ओ मुजफ्फरपुर गेल आ एम्हर चिन्तित माधवजी कैं हम कहने रहियनि जे जखनि छात्र स्वयं एतेक उत्सुक अछि तँ ओहि उत्सुकताकेँ रोकब उचित नहि।

किछु दिनक अभ्यन्तर पुनः झंझारपुर बजार मे भेटलाह। हमर जिज्ञासा पर ओ चिन्तित चित्तेँ चाहक दोकान दिस घीचैत कहलन्हि- गप्प कने माहूर भ गेल अछि आ ई गप्प ठाढ़े-ठाढ़ नहि कहि सकैत छी। दूगोट चाहक आग्रह करैत हम पूछलियनि जे कि बात छैक, अपने की कहैत छलहुँ? ओ अत्यन्त गम्भीर भ कहए लगलाह- की कहू! किछु नहि फुरा रहल अछि, एक दिस सन्तानक मोह आ दोसर दिस हमर आर्थिक स्थिति। पता नहि जे कोना दुनूक बीच सामंजस्य होएत। गप्पकेँ फरिछबैत कहलनि जे -काल्हि मुजफ्फरपुरसँ अएला पर खुशीपूर्वक कहलक जे कागज-पत्तरक कार्य भए गेल, हमर नामांकन उड़ीसाक एकटा इंजनियरिंग कॉलेज मे होएबाक अछि।

हमसभ क्षण भरिक लेल सुन्दर सपना देखनहिँ छलहुँ कि ओकर अग्रिम पंक्ति झकझोड़िकेँ राखि देलक। ओकर कहब छलैक जे एहि लेल कम सँ कम पाँच लाख टाका चाही। पाँच लाख टाकाक गप्प सुनितहिँ लागल जेना हमर शरीरसँ सबटा खून सोखि लेल गेल हो, मोनमे तत्कालहि आएल जे ने राधाकेँ नओ मन घी होएतनि आ ने राधा

नचतीह। आँखिक आगाँ अन्हार भए गेल छल, आगाँ कोनो इजोत देखबामे नहि आबि रहल छल। किंकर्त्तव्यविमुढ़क स्थिति छल। मुदा बेटाक ई शब्द सुनि जे आब बैंकसभ पढ़बाक हेतु कर्ज दैत छैक, किछु आशा जागल।

हम व्यग्र भए पूछि बैसलिऐक जे – एहि हेतु हमरासभकेँ की करए पड़त? ओ सहज रूपेँ कहलक जे एहि हेतु जमीनक कागज बैंक मे जमानति रूपमे जमा करए पड़त। ई गप्प सुनि बाबूजी बजलाह कोना होएत, कारण जखन हमरा तीनू भायमे बँटवारा नहि भेल अछि तखन जमीनक कागज बैंक मे कोना जमा कएल जाए सकैछ। हमर मुँहसँ अनायास निकलि गेल जे ई तँ असम्भव अछि। आ विवेक ई गप्प सुनतहिं भनभनाइत ओतए सँ उठि चल गेल आ अपन माएसँ कहि बैसल- 'लगैत अछि हमर कैरियर हिनके सभ जेकाँ एही खोनही मे सड़ि जाएत' आ ई कहैत घरमे जाकेँ सूति रहल। हमर स्थिति विकट छल, ने ओहि पार ने एहि पार, बीच समुद्रमे डुबैत एकटा निरीह प्राणी, जकर जीवनक कोनो आस नहि। एतबा कहैत ओ किछु कालक हेतु रुकलाह, हम हुनका विभिन्न तरहेँ आशान्वित करैत अपन-अपन बाट धएल। माधवजीकेँ किछु अति आवश्यक कार्यवश गाम जाए पड़लनि, जतए भेंट भए गेलखिन एकटा मित्र। मित्रक ममियौतकेँ सेहो इंजीनियरिंग पढ़बाक लेल चुनाओ भेल छलनि आ ओहो हुनके सन समस्यामे पड़ि समाधान ताकल आ नामांकन कराओल।

हुनकहि द्वारा ताकल समाधानक बाटेँ माधवजी सेहो पार उतरलाह आ बेटाक नामांकन कतेओ ढ़क- पेँचक बाद भोपाल मे भ गेलैक। पछाति अपन पेट काटि बेटाकेँ पढ़बैत रहलाह। कतेको दिनक बाद एकबेर फेर हुनकासँ झंझारपुरहिमे भेंट भेल ओ खूब प्रसन्नचित्त बुझएलाह। हमर भोज-भातक आग्रह पर अत्यन्त आह्लादित होइत तत्काल तैआर भए गेलाह, मुदा चाह-पान खाइत अपन-अपन घर दिस बिदा भए गेलहुँ। हुनकासँ मेंठ होइतहिँ नाचि उठल अपन छात्र-जीवन। सोचए लगलहुँ जे यदि हमरो सभक समय एतेक सहज रहितैक तँ आइ एम.ए. क केँ सूप महक भट्टा बनल नहि रहितहुँ।

मुदा ओएह गप्प, आब सोचिए केँ की! परञ्च, भूततँ पाछाँ छोड़निहार नहि, तँ पुन: स्मरण भए आएल अपन रोटी जोगाड़, आइ एहि ठाम तँ काल्हि ओहि ठाम, कोनहुना जीवनक गाड़ी घीचि रहल छलहुँ। इएह दौगा–दौगी मे पहुँचि गेल रही कर्नाटक। गामक सभ खुशी- अहा बेचारा बड्ड दिन सँ बौआ रहल छल, एहि बेर ओकर जोगड़क काज भेटलैक। मुदा जे भेटल, केहन भेटल ओ तँ हमहिंटा जनैत छलहुँ, मुदा किछु संतोषजनक तँ अवश्य छल। एतेक दूर अयलाक पश्चात गाम सँ सम्पर्क कमि गेल आ अपनाकेँ नव परिवेशमे घुला लेलहुँ। आइ कतेको सालसँ कर्नाटकमे रचल-बसल छी, मुदा गाम तँ गाम होइत छैक।

किछु दिनक अवकाश पर गाम पहुँचल छलहुँ। गाम जाए झंझारपुर बजार नहि जायब ई सम्भव नहि। संयोग एहन जे झंझारपुर जाइतहिँ भेटि गेलाह माधवजी।

कुशल क्षेम पूछैत कत छी, बहुत दिनक बाद भेटलहुँ, आदि प्रश्नक झड़ी लगा देलनि। हम कहलियन्हि जे एतेक प्रश्नक उत्तर ठाढ़े-ठाढ़ नहि द सकैत छी। ताहि पर ठहक्का मारैत बाजि उठलाह- अहाँ तँ हमर मूहक गप्प छीनि लेलहुँ आ ई कहैत हम दुनू गोटें चाहक दोकानमे पैसि गेलहुँ। चाहक चुसकीक सङ अपन कथा हुनका सुनबैत गाम सँ एतेक दूर, ताहि पर सँ निश्चितता नहि, ई गप्प–सप्प कहैत छियैन्ह। मुदा ओ आशाक पोटरी खोलैत कहलनि- भगवती सभ आशा पूर्ण करतीह। गप्प बढ़बैत हम विवेकक इंजीनियरिंग पढ़ाईक जिज्ञासु भेलहुँ, सङहि छुट्टीमे गाम अएबाक विषयमे पूछि बैसलिएनि।

हमर गप्प सुनि ओ एकबेर हमर मूह दिस ताकि आकाश दिस ताकए लगलाह। जेठक मास, तँ भगवान भास्कर अपन रौद्र रूपमे धरतीबासीकेँ अपन प्रतापेँ जरा रहल छलाह तैओ ओ हुनके दिस ताकि उठलाह। एकटा पैघ निसाँस लैत कहलनि- 'हँ गाम आयल अछि लगभग आठ दस दिन भेल हेतैक।' एकटा पैघ श्वास छोड़ैत कहि उठैत छथि- "मोनमे बहुत दिन सँ एकटा गप्प घुरिया रहल छल आ मोन होइत छल जे ककरो कहियौक, मुदा केओ ओहन विश्वस्त भेटिए नहि रहल छल, आइ संयोग सँ अहाँ भेंट भ गेलहुँ, होइत अछि जे ई गप्प अहाँकेँ कहि मोनकेँ हल्लुक करी।" हमर प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा बिनु कएनहि ओ सुरु भए गेलाह– "जीवनक एहि यात्राक धारमे कतेक ठोकर लागत से नहि कहि। मोने मोन प्रसन्न छलहुँ जे हम अपन लक्ष्य पाबि गेलहुँ, जीवनमे नव किरिनक आशा देखए लगलहुँ, मुदा एकाएक सम्पूर्ण भविष्य मेघाच्छादित भए गेल।" ई कहैत दहो-बहो नोरमे डूबि गेलाह।

बादमे बहुतो बुझौला पर ज्ञात भेल जे एक दिन सभ गोटा सङहि भोजन कए रहल छलाह। माधवजीक बाबूजी विवेकसँ पूछलखिन्ह जे ओतए कोना कि है। एहि पर ओ एकटा संक्षिप्त उत्तर देलक सभटा ठीके ठाक। आ बाबूजी वाह! वाह! कहए लगलाह। गप्प बढ़ैत गेल आ एही क्रममे विवेक एकटा एहन गप्प कहलकनि जे सभक मोन तीत अकत्त कए देलकनि। ओ कहलकनि जे ओतए सभ किछु तँ ठीक ठाक छैक मुदा हमरा ई कहैत लाज होइत अछि जे हमर पापा कोनो कार्य नहि करैत छथि आ नहि तँ कोनो पैघ व्यापारी छथि। ओकर कहब छलैक जे एतेक धरि हम पहुँचलहुँ अछि ओ तँ अपन विश्वाससँ, नहि तँ हमरहुँ पापा जेकाँ पाँच लाख टाकाक लेल पढ़बा आ नौकरी करबा सँ पहिने अपन सन्तानकेँ कर्जदार बनबए पड़ितए।

आगाँ ओ दादाजीसँ कहि बैसल- अहाँ तँ बहुत पैघ पंडित छी तखनि ई कखनो अहसास नहि भेल जे अहाँ सँ कम पढ़ल-लिखल पंडित जागे झा अपन दुनू बेटाकेँ कत सँ कत पहुँचा देलन्हि, हमरा तँ अहाँक एहि बुद्धि पर हँसी लगैत अछि जे अहाँक बेटासभ हाथ-पैरक अछैतो लुल्ह-नांगर बनि बैसल रहि गेलाह, जाहिसँ सम्पूर्ण परिवार काहि काटि रहल अछि। माधवजी ओ हुनक बाबूजीकेँ किछु फुरिऐ नहि रहल छलनि, मुदा विवेक लेल धनि सन, ओ बुदबुदाइत रहल- कोन घरमे जन्म भ गेल, से नहि जानि।

माधवजीकेँ शान्त करबामे ठीके बहुतो समय लागल, यद्यपि छगुन्तामे अपनहुँ पड़ल छलहुँ। पान हुनक हाथमे दैत मात्र एतबहि कहि सकलिएनि- माधवजी, ई नवका बसात छियैक, आ एहि बसातमे अपने जे संवेदना तकबैक ओ असम्भव। बुझियौ जे हमरा लोकनि एकटा चिड़ै छी जे अपन बच्चासभक लेल अपन सभ आकांक्षाकेँ आगि मे झोकि ओकर सभक आकांक्षा पूरा करैत रहू एहि आशामे जे एकटा नव बिहान अओतैक। ठीक ताही बेरमे हमर गाम जाय बाली गाड़ी खुजबाक लेल पुक्की मारि रहल छल आ हम हुनका सँ विदा लैत चलि पड़ैत छी आ रास्ता भरि अपस्याँत माधवजी हमर आगू मे नचैत रहैत छथि आ हम सोचए लगैत छी ई नबका बसात......!"

शेषांश पेज 16

तीन करोड़ लाभार्थियों को कम ब्याज दर के रुप में देने का प्रस्ताव है । इसके तहत तीन प्रकार के ऋण, यथा, शिशु, किशोर और तरुण दिये जाते हैं। शिशु योजना के तहत पचास हजार रुपये तक का ऋण कम ब्याज दर और आसान शर्तों पर दिया जाता है।किशोर योजना के तहत स्वरोजगार शुरु करने वाले व्यक्ति को पचास हजार रुपये से पांच लाख रुपये तक तक ऋण दिया जाता है और तरुण योजना के तहत कारोबार शुरू करने के लिए पांच लाख से दस लाख रुपये तक का ऋण जरुरतमंदों को दिया जाता है। अधिकांश लघु उद्योग प्रधानमंत्री मुद्रा ऋण की वजह से चल रहे हैं।

- ग्रामीणों को बैंक से जोड़ने, महिलाओं का सशक्तीकरण करने, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण या सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे ग्रामीणों के खाते में डालने, डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देकर ग्रामीणों की पहुंच दुनिया के बाजार तक करने, बिचौलिये की भूमिका को खत्म करने आदि का काम भी किया जा रहा है। देश में लगभग 1.30 लाख से अधिक बैंक शाखाओं का नेटवर्क है।
- प्रधानमंत्री जन-धन योजना की मदद से लगभग 40 करोड़ लोग बैंक से जुड़ चुके हैं। इस वजह से बैंक ज्यादा किसानों और लघु, छोटे एवं मझौले कारोबारियों को ऋण दे पा रहे हैं।
- बैंक, ग्रामीणों को वित्तीय रुप से साक्षर भी बना रहे हैं| बैंक देश को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन आत्मनिर्भरता का भाव समाज में भी उत्पन्न होना चाहिए, क्योंकि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए सरकार के साथ समाज के सभी वर्गों का सहयोग आवश्यक है।

इस प्रकार हमने देखा कि सरकार की आत्मनिर्भर भारत योजना को क्रियान्वित करने में बैंकों का सीधा योगदान रहा है ताकि सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के कल्याण के लिए निर्धारित राहत की राशि जरुरतमंदों तक पारदर्शी ढंग से पहुंचे और बैंकों के सामाजिक दायित्व का निर्वहन भी सही ढंग से हो पाये ।

शोबति सुंदर आमचे गोंय

सुनील रामकृष्ण आचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक
मापुसा शाखा, गोवा

सार-संक्षेप

इस लेख के माध्यम से लेखक ने गोवा के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बात की है। वह गोवा की खूबसूरत प्रकृति के बारे में लिखते हैं। इस लेख में उन्होंने गोवा संस्कृति, आर्थिक गतिविधियां, व्यंजन, आस-पास की भाषा और गोवावासियों की जीवन शैली के बारे में बताया है।

पाचवे चार दोंग्रावली आनी मदी दर्या निळो आमोरेर आंगणातल्या मोगरेक फुलता कळो अशें कवी माधव बोरकार हाणी केल्ले गोंयच्या सैमाचे वर्णन। गोयं सैमान नटिल्लो माणकुलओ प्रदेश। अशें म्हणतात महषी परशुरामम निक्षत्तिय पृथ्वी करतकच नपश्चर्या करपा खातीर समुद्रान बाण सोडलो आनी एक बेट निर्माण केले। ते बेट म्हणल्यार आमची गोमंतक भूमी म्हणजेच आमचें गों। भारताच्या पश्चिमी समुद्र तटार वसलेले माणकुले गोंय। भारताचो पश्चिमी किनारपट्ट्री म्हणजेच महाराष्ट्राचो कांय भाग आनी गोंय हाका कोंकण अशें म्हटले वता। गोय हे भारताचे सगळयान ल्हान राज्य। जवळ जवळ 450 वर्सा पोर्तुगिजांनी गोंयाचेर राज्य केलें। शेवटाक 19 डिसेंबर 1961 हया दिसा पोर्तुगिजमाच्या जुलमी राजवटीतल्यान गोंय मुक्त जाले।

गोंयचो भांगराळो इतिहास जर तपासून पळयलो तर हांगा वेगवेगळया राजघराण्याचें शिलालेख दिसून येतात। चालुक्य, मौर्य, शिलाहार आदि राजकर्त्यांनी हांगा राज्य केले। ते भायर विजयगरचे राजकर्ते, आदिलशाह आदि राजकर्त्यांनी हांगा अधिकार गाजयलो। कंदब राजघराण्याचे शिलांलेख आनी वास्तु शिल्पा गोंयच्या विंगड वाठारांनी दिसातात। हाची एक देख म्हणल्यार तांबडे सूर्लाचे महादेवाचे देऊळ ।दवरले आनी हाहा म्हणटा अलबुकेर्कान जैत मेळवन गोंयान आपले हातपाय पसरेल आनी पुराय गोंय आपल्या ताब्यान घेतले।

3,702 चौरस किलोमीटर इतते क्षेत्रफल आशिलल्या गोयाच्या उत्तरेक महाराष्ट्र तर पुर्व आनी दक्षिणेक कर्नाटक राज्य आसा। पश्चिमेक आशिल्लो अरब सागर गोंयच्या सैमान आनीकूय भर घालता। गोंयच्या हया मनभुललवणी दर्या देगोआनी, सोबीत देवळा,दुधसागरा सारखो धबधबो आनी कितल्याशंय विज्मीतांनी गोंयचे नाव जागतिक नकाशाचेर भांगरा उतरानी कोरु न दवरला। मांडवी आनी जुवारी सारक्यो गोंयच्यों मुखेल न्हंयो गोंयच्या सैमाक आनीकूय ओढलावणो करतात। मार्मगोवा हे गोंयातलेच न्हय तर पुराय दक्षिण आशियातले फामाद अशें बदर। गोंयातले हवामान दमट आसा। हांगा गिम, पावस, आनी शियायें दीस म्हणल्यार तीन ऋतु गर्मी, पावस आनी थंडी। गर्मे दिसानी हांगाये चडानचड तापमान 35 जाल्यार शिया दिसानी कमीत कमी 18 तापमान आसता। हांगयो पावस तर पळोवपा सारकों मन भुलवणो। गोंय हे भारतातले एक श्रीमंत राज्य । पणजी राजधानी मांडवी न्हंयचे देगेर मांडवीच्या कुशीत आसा। पर्यटन हो हांगाचो मुखेल उदयोग। त्याभायर नुस्तेमारी काजु आनी आम्याच्यो बागायती (कुळागरा) हांगाच्या लोकजीर्णची आंगा जावन आसा। हागाच्ये लोकांची आवयभास कोंकणी, जीचे माधुर्य आनी गोडी आमका रोकडीय आपलोशी करता। कोंकणी बरोबर हांगाच्या कोकांनी मराठी, हंगलीश आनी हिंदी ही आपलीशी केल्या।

हांगाच्या लोकांये मुखेल अन्न म्हणल्यार शीत कडी। हांगाच्या लोकाये जेवण नाल्लाशिवाय कशेच पुराय जायना। शागुती, सुंगटाकडी, शीत कुल्यातोंणाक हयो हांगाच्या लोकांच्यो फामाद डिश।

आमच्या गोंयान फक्त हिंदूच न्हय तर ख्रिस्ती आनी मुसलमान भाव एकचारन रावतात। संयच्चीय परब एकमेकागेर वचून गोंडघोड दिल्ल्याबगर तांची परब पुराय जायना।सगळे लोक एकठाय येवन वेगवेगळयो परबो मनयतात। कलेच्या मळार गोंयान कितलेशे? कलाकार दिल्यात गानसम्राज्ञी लता दीदी, लयभास्कर खाप्रूमाम पर्वतकर, तियात्रीस्ट रेमो अशी ही लांबूच लांब वळेरी। हांगाचे लोक सामके सादे भोळे घुमठाच्या तालार नाचपी गावपी। धोलो, फुगडी, मांडो, जागोर हे हांगाच्या लोकजीर्णची काय आंग। गोंयचे लोक सैमाच्या तालार नाचपी आयल्या गेल्यांक मान दिवपी। म्हणूनूच पर राज्यातल्यान हांगा आयिल्ले लोक परत आपल्या गांवघरा वचुक सोदनात। गोंयकार सुशेगाद अशे म्हणतात। पुण हे सुशेगादपण म्हळयार वायट न्हय। कित्याक पर गोंयकार आपल्या फामिलीक जायतितले सुखासमाधानान जगपाकजाय ते कमयले की उरिल्लो वेळ आपल्या घरच्यां बरोवर घालयातात आनी खोशेची चीण जियेतात।

हिन्या माणकांचे भांगरा रुप्याचे सोबीत सुंदर माणकुले आमचे गोंय।
देव बरें करु।

अनंत कुमार ब्रह्मा
विशेष सहायक
कोकराझार शाखा

बड लेन्डनि महर

सन्कस्निफ्राइ सदियासिम बुर्लुंबुथुरनि साहा,
भूटान राजजोनि ब्ला–ब्ला हायेन खोलाहा,
गथ–खान्थाल, थाइजौनि बारी, बिफां–लाइफां रिजाब बारी,
बेसे समाइना बड' लेन्ड राइजो बर' हारिनि हालाम।

जोबनो थाडा हान्था–मेलानि समायना–रमायना राजा लामा,
सान्थ्र, हाया मिदिम–गिदा बड' लेन्ड नि गामीयारी लामा,
बैसागु जानाय, हाबा–खोराइ मोसानय, धोरोम फुजिनाय,
बेसे नायथाव, बेसे गोमोथाव बुंस' हाया बर' गामीया।

जांरिव्रखांदोंमोन उदांस्री मीन्नी बर' हारिया,
बोसोर गोबां नंदीमोन दावहा, हाददनि थाखाय बारसोमदोंमोन,
दुखु–दाहा सहायदोंमोन, थावरिनो गोब्रान मोन्दीमोन,
रुंसारी जादोंमोन दुखुथिया सान्थ्र' हायै बर' सुबुडा।

बिदोंमोन गिबियाव उदां राइजो उदयासल,
बिदोंमोन उनाव उदां मिचिं–बड' लेन्ड,
मोन्दोंमोन जोबनायाव बड' लेन्ड महरै राइजो
आबुङै नङा नाथाय आद्रासो बर' राइजी।

खेब्सेयाव जादोंमोन बि–ए–सि सुक्ती,
खेब्नैयाव जादोंमोन बि–टि–सि सुक्ती,
खेब्थामाव जादोंमोन बि–टि–आर सुक्ती,
बुंनागोन दा लाथ' दो जोथोन देरजासे बेखैनो बर' हारीया।

सार संक्षेप -: **बड' लेंडनि महर (बोडोलैंड की छवि)**

सोकोश नदी से लेकर सोडिया नगर तक ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी भाग की तरफ एवं जो भूटान के पीछे है तथा भूटान का दक्षिणी भू-भाग है जो मैदानी क्षेत्र का विशाल हिस्सा है, विभिन्न खाने योग्य फलों के पेड़ से भरा हुआ यह खूबसूरत वृहत भूमि और विशाल जंगली क्षेत्र, जो प्राकृतिक रुप से अत्यंत ही खूबसूरत है – यह हमारा बोडोलैंड है। यह पर्यटकों के लिए अत्यंत खूबसूरत स्थान है। हमारे बोडोलैंड में प्रत्येक वर्ष बीहू नृत्य, केरा नृत्य, धार्मिक त्योहारें और ऐसे कई अन्य आयोजन बहुत ही खूबसूरती से आयोजित होते हैं। आइए, हमारे बोडो समुदाय के शांतिपूर्ण और अच्छे भविष्य की कामना करें।

दिनलता ब्रह्मा
एस डब्ल्यू ओ (बी)
दोतमा शाखा

धोरोम

जिउखौ आदानि दाखालाम
जिउआ मालायनि नंआ
जोनोम मोन्नायखौनो
खाफाल गोनां गेरेदरसिन गुन
खुसि आरो दुखु जाफुंनाय आरो जाफुंयैया
थांलाइ–फैलाह
जों बेफोरजों थगायजानो नांआ
थगायग्राखौ दबथायग्रा हाथियारा
जों गावनो गाव
मानोना–
जोनोमा गले–गले नाङ
जोंफाफ गोनां जानो नाङ
मुगै जानायजों देरहानी नाङ
अहंखारजों जेन्नो नाङ
फान्दायनानै लाजिफोनांनो हामा
जोनोमाव फैफानाय
थैनायाव थांफानाय
जिउनि असेया सोर?
लाथ्र’ हाया
स’ ना, रुफा, रां, धोन– धौलद,
थांनायनि इन्जिन दाब्बाआव
बेफोरखौ दोन्नो जायगा गैया
मोनलांफानाय जिवनि खुबिर
बेसो लाइनो सैथो आरो धोरोम।

सार संक्षेप -: **धर्म**

अपना जीवन कभी भी बेकार मत करो, यह जीवन दूसरों का नहीं है; आपके लिए सौभाग्य की बात है कि आप जीवित हैं, यह इंसान की वास्तविकता है जो यह समझता है कि अच्छा और बुरा, सफलता और असफलता यह सब प्राकृतिक है। कभी भी झूठ मत बोलो, अतः निरपराध बनो और बुरे कार्यों से दूर रहो। कभी घृणा मत करो, कभी घमंड मत करो, कभी लोगों के साथ धोखा मत करो। जन्म के साथ, मृत्यु के साथ तुम्हारे जीवन में सबसे प्रिय कौन है? अनगिनत संपत्ति, प्रचुर धन इन सब चीजों के लिए तुम्हारे पास जगह नहीं है जिसे तुम मृत्यु पश्चात अपने साथ ले कर जा सको।

कोविड

- ఇంట్లో బంధి చేసావు. గదిలో ఒంటరిగా ఉంచావు.
  ఆత్మీయులను దూరం చేసావు.
  విషాదంతో సావాసం చేయించావు.

- లాక్‌డౌన్‌తో దేశాన్ని స్తంభింపచేసావు
  మానవ జీవితాన్ని అస్తవ్యస్తం చేసావు.

- నిత్యం పీల్చే ప్రాణవాయువు కోసం పోరాటం చేయించావు
  ప్రాణం పోసే వైద్యుల ప్రాణాలు కూడా హరించావు.

- బ్రతికున్నప్పుడు పేదవాడిని ఆకలితో సహజీవనం చేయించావు
  చనిపోయాక కడసారి వీడ్కోలుకి ఆ నలుగురు కూడా లేకుండా చేసావు.

- మొహానికి మాస్క్ వేయించావు. చేతికి గ్లౌజులు తొడిగించావు
  గుండెలో ధైర్యం నింపుకొని ముందుకు పొమ్మన్నావు

- మన వంటిల్లే వైద్యశాల అని గుర్తు చేసావు
  పెరట్లో పెరిగే తులసి మొక్క విలువ తెలిపావు.

- రోగ నిరోధక శక్తి పెంచుకోమన్నావు
  ఆరోగ్యం కంటే ధనం గొప్పది కాదని రుజువు చేసావు.

- మొదటి సారి నీ పైన విజయం సాధించాం అనుకున్నాము
  కానీ రెండోసారి సునామీలా వచ్చి ముంచేసావు.

- నువ్వు ఎన్ని సార్లు ఎన్ని రూపాలలో వచ్చినా మాస్క్ అనే ఆయుధంతో.
  వాక్సిన్ అనే కవచంతో గుండెల నిండా ధైర్యాన్ని నింపుకొని.
  దేశం అంతా ఒక్కటై. నీ కోరలు విరిచేస్తాం.

जी. देवी प्रियंका
सहायक प्रबंधक
अंचल कार्यालय, हैदराबाद

सार-संक्षेप

तुमने मुझे घर में बंद कर दिया, एक कमरे में अकेला कर दिया; तुमने मुझे अपनों से दूर कर दिया, अकेले यात्रा करने पर मजबूर कर दिया
.... तुमने याद दिलाया कि हमारी रसोई में औषधीय जड़ी-बूटियां हैं, और तुलसी का पौधा....वह एक चमत्कार है।
...... तुमने एक बार फिर साबित कर दिया , कि पैसा स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।
..... तुम किसी भी रुप में आओ, किसी भी समय आओ,
हम तुमसे हथियार के रूप में मास्क, कवच के रुप में टीका, साहस से भरे दिल के साथ लड़ेंगे,
और पूरे देश एक होकर , हम तुमको अपने देश से बाहर निकाल देंगे।

ए. फनी गोपाल
मुख्य प्रबंधक
वित्तिय समावेशन विभाग
प्रधान कार्यालय

सार-संक्षेप

कोरोना महामारी से जूझ रहे लोगों के बीच निराशा के बादल को दूर कर किस प्रकार आशा की किरण जगाएं, यही इस लेख में बताया गया है। कोरोना से ग्रस्त परिवार के साथ सकारात्मक नजरिये से बात करने से उनका हौसला बढ़ता है और वे नए जोश के साथ इस प्राणलेवा बीमारी से लड़ते एवं विजयी होकर निकलते हैं। जीवन में आए संकट से बाहर आने का एक ही रास्ता है- सकारात्मक दृष्टिकोण।

మనోబలమే జయం

కోరోనా .. ఈ మాట వింటేనే అందరిలో ఏదో తెలియని భయం , ఆందోళన, ఆవేదన మరియు ఇలాంటివి ఎన్నో భావాలు . నిరుడు కోరోనా సోకిన వారిని అంటరానివారిగా చూసే పరిస్థితి నుంచి నేడు వారిని ఆదరించి ఆదుకునే స్థాయి కి మానవాళి ఎదిగింది. కోరోనా తో బాధ పడేవారికి మనం దెగ్గర ఉండి ఏమి చేయలేని అసహాయులుగా ఉన్నాం. వారికి మనం చేయగలిగిందల్లా " మీకు తోడుగా మేము ఉన్నాం. మీరు ధైర్యంగా ఉండండి" అని వారి మనోబలం తగ్గిపోకుండా బాసటగా నిలవటమే. అయినప్పటికీ ఈ మహమ్మారి తో బాధ పడుతూ వైద్యం పొందుతున్న వారితో ఎలా వ్యవహరించాలన్నది చాలా మందికి తెలియని విషయమే . దీనికి ఒక ఉదాహరణే ఈ చిన్ని కథ

" పెద్దనాన్నగారూ! నాన్నను నిన్ననే అపోలోలో జాయిన్ చేసా! నాలుగురోజులుగా జ్వరం తగ్గలేదు! ఆక్సిజన్ లెవెల్స్ తగ్గుతున్నాయి. ఛాన్స్ తీసుకోలేక, వెంటనే అపోలోకి తెచ్చా. రాపిడ్ టెస్ట్ పాజిటివ్! నిన్ననే Remdesivir మొదలుపెట్టారు! స్నేహితుడొకడు పెద్ద రికమెండేషన్ మీద రూమ్ ఇప్పించాడు!".... పాఠం అప్పచెప్పినట్టు చెప్పేసాడు ఋషి... కొంత ఆయనంటే భయం, కొంత నాన్న గురించిన ఆందోళనా పాపం పిల్లాడిలో!

" అవునా! ఎలా ఉన్నాడురా వాడు?".... అని అడిగారు సత్యమూర్తిగారు. " ఇదిగోండి ఇస్తా ! ఒకసారి మాట్లాడండి!".... అంటూ నాన్న చేతికి ఫోన్ ఇచ్చాడు ఋషి! " అన్నయ్యా!"... అంటూ నీరసంగా పలకరించాడు సూర్యం!

జాగ్రత్తరోయ్! రోజులేం బాలే! మన కుటుంబంలోనే... ఇప్పటికి డజన్ కేసులు. నలుగురు పోనే పోయారు. మా చుట్టుపక్కల అపార్ట్ మెంట్లలో రోజుకో రెండుమూడు కేసులురా! ఈ సెకండ్ వేవ్ ఊడ్చిపెట్టేస్తోంది జనాలను! ఇంట్లో ఏ కషాయాలో తాగి ఉండకుండా... వెధవ **ఆసుపత్రి** కి ఎందుకు పోయావ్. **ఆసుపత్రి** కి వెళ్ళిన వాళ్ళు సగం మంది తిరిగే రావడం లేదట! పైగా మూడువేల మందు ముప్పైవేలకు అమ్ముతున్నారట. అయినా కుర్రవెధవ నీతో ఉండడమేంటి? మొన్న మా రాజారావ్ కొడుకు...**అమ్మ** నాన్నలకి కీ కోవిడ్ వచ్చిందని పరిగెట్టుకొస్తే, వాడికీ మహమ్మారి అంటుకుని... మొత్తం కుటుంబం బలయిపోయారు!"...... అన్నగారి భయ భ్రాంతి జనిత వాక్కులకు అప్పటికే వణికిపోతున్నాడు సూర్యం! ... స్వాభావికంగా కుటుంబంలోనే పిరికివాడు, అర్భకుడు అతను. దానికి తోడు కోవిడ్!

భర్తచేతిలోంచి ఫోన్ లాక్కున్నట్టు తీసుకుంది సత్యవతమ్మ! " నాయనా సూర్యం!! నేను పెద్దవదిన్ని!"... అందో లేదో భోరుమన్నాడు మరిది!

వదినా! అంతా అయిపోయింది. పిల్లల్ని , సీతనీ దిక్కులేని వాళ్లను చేసి పోతున్నాను. వాళ్ళ పెళ్ళిళ్లు, పుణ్యకార్యాలూ నీదే బాధ్యత ఇకపై" ... అంటూ ఏవేవో అనేస్తున్నాడు సూర్యం!

" నీ మొహం! ఏవీ అవ్వవు.రెండు రోజుల్లో లక్షణంగా ఇంటికొచ్చేస్తావు. పోనీ నన్ను రమ్మంటావా, అంత భయంగా ఉంటే! సూరీ నీకొకటి చెప్పనా, ఏడిద సుబ్బారాయుడి గారు రాసిన నీ జాతక ప్రకారం నీకు తొంభై ఎనిమిదేళ్ళ ఆయుర్దాయం ఉంది. ఇప్పటి వరకూ ఆయన చెప్పింది ఎప్పుడు తప్పలేదు. చిన్నప్పుడు మశూచికమే ఏమీ చెయ్యలేదు నిన్ను, ఈ కోవిడ్ ఎంతయ్యా! నువ్వు చేసుకునే...నిరంతర మహాసౌరజపం , ప్రాణాయామం ఉత్తినే పోవు. ఇట్టే తరిమేస్తాయి మహమ్మారిని. ధైర్యంగా ఉండు. నాకూ, సీతకూ మానససరోవరం చూపిస్తానన్నావు. మాట నిలబెట్టుకోవాలిగా! కనుక వెర్రి ఆలోచనలు మాని, హాయిగా వైద్యం చేయించుకుంటూ, బలంగా తింటూ, భగవద్ధ్యానం చేసుకో. శుభ్రంగా నయమయిపోతావు. అన్నయ్య చేత ఓ లక్షరూపాయిలు నీ అకౌంట్లో వేయిస్తా. అందాకా వుంచు! అవసరమయితే అందరం నీతో ఉన్నాం! సరేనా నాన్నా!"..... వదినగారి సాంత్వన వచనాలతో సగం రోగం తగ్గనట్టయింది సూర్యానికి!

" అన్నయ్య తెగ భయపెట్టేసాడనుకో వదినా!"... అన్నాడు నీరసంగా!

" విన్నానయ్యా! ఏం మనిషో ఏం లోకమో! అలాగేనా మాట్లాడేది? అంత తెలివే ఉంటే... కలెక్టర్ గా రిటయిర్ అయ్యేవారు కాదూ! డిప్టీగా మిగిలిపోయారు! ... అందామె కినుకగా!

పకపకా నవ్వాడు సూర్యం,ఆమె మాట్లాడిన తీరుకి ! తనేం తప్పు గా మాట్లాడేడో తెలియక ,అయోమయంగా చూస్తూ, మళ్ళీ టీవీలో కరోనా వార్తలకు అతుక్కుపోయారు సత్యమూర్తి!

विविध

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 में भाषा विमर्श

सुभाष चंद्र साह
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय , रायपुर

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी की स्थापना की जाएगी , जिसमें हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रुप से वह भाषा बोलने वाले लोग शामिल रहेंगे ताकि नवीन अवधारणाओं का सरल एवं सटीक शब्द भंडार तय किया जा सके। जहां तक संभव हो साझे शब्दों को भी अंगीकृत करने का प्रयास किया जाएगा।

भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को चिर प्रतीक्षित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की गई । इस शिक्षा नीति में बहुआयामी संदर्भो में विविध स्तरों पर व्यापक एवं आमूलचूल परिवर्तन किए गए हैं । इसके अंतर्गत जीवन में भाषा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए भाषायी चिंतन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

वस्तुत: भाषा भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम एवं ज्ञानार्जन का अपरिहार्य साधन होने के साथ-साथ मानव के विकास की आधारशिला भी है। यह मानव के भाव, विचार, अनुभव एवं आकांक्षाओं को संरक्षित करती है । यह मानव सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कार की पहचान होती है तथा उसे संपोषित एवं संवर्धित भी करती है।

भारत में भाषा आधारित विमर्श समय-समय पर यहां की शैक्षणिक जमीन पर उगते रहे हैं । भाषायी विमर्श कहीं न कहीं हमें अपनी भाषा-बोली से जोड़ता है । हमें एक ऐसे बहुभाषी समाज का हिस्सा बनाता है जहां भाषाओं की छटाएं पग-पग पर सुनने, बोलने और पढ़ने को मिलती हैं। भारत की यात्रा में कोस- कोस पर भाषायी विविधताओं के दर्शन होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुभाषी समाज में जीने वाले व्यक्ति की अभिव्यक्ति क्षमता उसके जीवन के हर क्षेत्र में देखी और सुनी जा सकती है। इस बहुभाषी समाज के इस वैशिष्ट्य के संरक्षण के लिए जरुरी है कि बच्चों को शैक्षणिक जीवन में बहुभाषायी दक्षता प्राप्त करने का अवसर मिले ,लेकिन इस समय हमारे बच्चे विद्यालय के स्तर पर भाषा का बुनियादी कौशल भी हासिल नहीं कर पा रहे हैं। बच्चों का एक बड़ा हिस्सा पढ़ने , लिखने आदि कौशल में पिछड़ रहा है । वे भाषायी पठन, समझ और लेखन कौशल से महरूम रह जा रहे हैं । यही बच्चे जब महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में जाते हैं तो वे या तो भाषा-अध्ययन छोड़ देते हैं या फिर भाषा एवं साहित्य अध्ययन में रुचि नहीं लेते, फलत: विकास की गति अवरुद्ध हो रही है । नई शिक्षा नीति में इस ओर ध्यान दिया गया है तथा भाषा की शक्ति को न केवल शिक्षा के माध्यम के रुप में , अपितु व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास तथा सभ्यता ,संस्कृति एवं राष्ट्र की चेतना को आलोकित करने के रुप में निरुपित किया गया है।

इस शिक्षा नीति के अंतर्गत विविध रुपों में वर्णित भाषा की शक्ति एवं विमर्श को सुगमता के लिए निम्नांकित शीर्षकों के अंतर्गत अध्ययन किया जा सकता है –

स्थानीय भाषा एवं मातृभाषा : इस शिक्षा नीति में स्थानीय एवं मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के तौर पर सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इस नीति के अध्याय IV में 'बहुभाषावाद तथा भाषा की शक्ति' शीर्षक के अंतर्गत यह कहा गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा /मातृभाषा में सार्थक अवधारणों को अधिक तेजी से सीखते हैं एवं समझ लेते हैं। अत: जहां तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि ग्रेड 8 एवं इससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा / मातृभाषा / स्थानीय एवं क्षेत्रीय भाषा होगी। इसके बाद घर एवं स्थानीय भाषा को जहाँ भी संभव हो, भाषा के रुप में पढ़ाया जा सकेगा।

सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र दोनो तरह के विद्यालय इसकी अनुपालना करेंगे । विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकों को घरेलू भाषाओं / मातृभाषाओं में उपलब्ध कराया जाएगा।

न्यूनतम 5 ग्रेड तक एवं तरजीह के साथ ग्रेड 8 तक और उससे आगे भी मातृभाषा / स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा को ही शिक्षा का माध्यम / अध्ययन भाषा बनाए रखने पर विशेष जोर के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मसौदा तैयार करने वाली समिति के प्रमुख रहे डॉ के. कस्तूरीरंगन का कहना है कि देश में अंग्रेजी भाषी आबादी केवल 15-16 प्रतिशत है जो कोई बड़ी संख्या नहीं है। उन्होंने कहा कि बच्चा जन्म से ही बाहरी दुनिया से मातृभाषा में संवाद करता है, इस वजह से मातृभाषा पर मस्तिष्क की सक्रियता अन्य किसी माध्यम से अधिक प्रभावशाली होती है। यही कारण है कि नई शिक्षा नीति में मातृभाषा पर विशेष जोर दिया गया है।

क्षेत्रीय एवं भारतीय भाषाएं : नई शिक्षा नीति में क्षेत्रीय एवं भारतीय भाषाओं पर काफी बल देते हुए बहुभाषिकता को अमूल्य माना गया है। इस नीति में यह उल्लेख किया गया है कि अनुसंधान में यह बात सामने आई है कि बच्चे 2 से 8 वर्ष की आयु के बीच बहुत जल्दी भाषा सीखते हैं एवं इस उम्र से छात्रों को बहुत अधिक संज्ञानात्मक लाभ प्राप्त होते हैं। अत: फाउंडेशनल स्टेज की शुरुआत एवं इसके बाद से ही बच्चों को मातृभाषा पर विशेष जोर के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं में एक्सपोजर दिए जाएंगे। शुरुआती वर्षों में पढ़ने एवं बाद में लिखने के साथ ग्रेड 3 एवं आगे की कक्षाओं में अन्य भाषाओं में पढ़ने तथा लिखने के कौशल विकसित किए जाएंगे।

त्रिभाषा फार्मूला : संवैधानिक प्रावधानों, लोगों ,क्षेत्रों एवं संघ की आकांक्षाओं तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए त्रिभाषा फॉर्मूले को लागू किया जाना जारी रहेगा। हालांकि यह स्पष्ट किया गया है कि इस त्रिभाषा फार्मूला में लचीलापन जारी रहेगा। किसी भी राज्य पर कोई भी भाषा थोपी नहीं जाएगी। बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों , क्षेत्रों एवं छात्रों के स्वयं के होंगे ,जिसके अंतर्गत तीन भाषाओं में से न्यूनतम 2 भाषाएं भारतीय भाषाएं होंगी।

संस्कृत एवं अन्य शास्त्रीय भाषाएं : इस नीति में संस्कृत सहित भारत की समस्त शास्त्रीय भाषाओं एवं साहित्य के महत्व, प्रासंगिकता एवं सौंदर्य को काफी महत्व दिया गया है। संस्कृत के समृद्ध साहित्य एवं इसमें निहित ज्ञान विज्ञान के अतुलनीय भंडार को दृष्टिगत करते हुए संस्कृत पर काफी बल दिया गया है। संस्कृत को त्रिभाषा की मुख्यधारा विकल्प के साथ , विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा के सभी स्तरों पर एक महत्वपूर्ण व समृद्ध भाषा के रुप में पेश किया जाएगा। संस्कृत को मुख्य धारा में लाकर इसके ज्ञान को सर्वसुलभ बनाया जाएगा। इसके साथ ही भारत की अन्य शास्त्रीय भाषाओं यथा तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया सहित विभिन्न भाषाओं के अतिरिक्त पालि, प्राकृत, फारसी तथा उसके समृद्ध साहित्य को उसकी समृद्धि तथा भावी पीढ़ी के सुख तथा समृद्धि के लिए संरक्षित किया जाएगा।

विद्यालयों में व्यापक रुप से छात्रों के लिए ये भाषाएं विकल्प के रुप में मौजूद रहेंगी। छात्रों के पास भारत की शास्त्रीय भाषाओं एवं इससे जुड़े साहित्य को कम से कम दो साल सीखने का विकल्प होगा। ग्रेड 6 से 12 तक के विद्यार्थी इन्हें सीख पाएंगे तथा यहां तक कि इसके बाद भी इनका अध्ययन करने का विकल्प उनके पास मौजूद रहेगा।

विदेशी भाषाएं : नई शिक्षा नीति में यह कहा गया है कि भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में उच्चतर गुणवत्ता वाले कोर्स के अलावा, विदेशी भाषाएं ,जैसे कोरियाई, जापानी, थाई , जर्मन , स्पेनिश ,पुर्तगाली और रुसी भी माध्यमिक स्तर पर व्यापक रुप से उपलब्ध करवाई जाएगी ,ताकि छात्र अपनी रुचि के अनुसार उन्हें सीख सकें तथा उसके माध्यम से विश्व संस्कृति के बारे में जान सकें।

इस नई शिक्षा नीति में भाषा विषयक नीति के कार्यान्वयन के लिए विविध उपायों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें प्रमुख हैं-

1.घरेलू भाषा / मातृभाषा / स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा आदि को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए इन भाषाओं में उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्रियों को उपलब्ध कराना प्राथमिकता होगी। आवश्यकतानुसार द्विभाषी शिक्षण – अधिगम सामग्री भी उपलब्ध कराई जाएगी।

2.विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए तथा भाषा शिक्षण को लोकप्रिय बनाने के लिए तकनीक का वृहद् उपयोग किया जाएगा । नवीन तथा अनुभवात्मक विधियों के द्वारा रुचिकर ढ़ंग से भाषा शिक्षण को समृद्ध किया जाएगा।

3.प्रत्येक विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान 'द

लैंग्वेजेज ऑफ इंडिया' पर एक मजेदार प्रोजेक्ट / गतिविधि में भाग लेगा, जैसे ग्रेड 6-8 में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल' । इस रुचिकर तथा आनंददायी गतिविधि में छात्र अधिकांश रुप से प्रमुख भारतीय भाषाओं की वर्णवाला, ध्वनि, लिपि, व्याकरण संरचनाओं जैसी विशिष्टताओं एवं उनकी साहित्यिक विरासतों के बारे में जानेंगे । इससे उन्हें भारत की एकता तथा सुंदर सांस्कृतिक विरासत तथा विविधता दोनों का एहसास होगा । वे विभिन्न भाषाओं में अंतर्निहित एकात्मक शक्ति की भी पहचान कर सकेंगे।

4.भारतीय साइन लैंग्वेज को देशभर में मानकीकृत किया जाएगा ,और राष्ट्रीय तथा राज्य पाठ्य सामग्री विकसित की जाएगी, जो बधिर विद्यार्थियों के उपयोग में लाई जाएगी । जहां तक संभव एवं प्रासंगिक होगा ,वहां स्थानीय सांकेतिक भाषाओं का सम्मान किया जाएगा तथा उन्हें सिखाया जाएगा।

5.सभी भारतीय एवं स्थानीय भाषाओं में दिलचस्प एवं प्रेरणादायक बाल साहित्य एवं सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लिए विद्यालयों तथा स्थानीय पुस्तकालयों में बड़ी मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध करायी जाएंगी।

6 . संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं तथा अन्य लुप्त होती भाषाओं के संरक्षण के लिए तथा उसे जीवंत एवं प्रासंगिक बनाए रखने के लिए अधिगम सामग्री, प्रिंट सामग्री तथा शब्दकोश बनाने व उसे अद्यतन करने की गति तेज की जाएगी।

7.विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्रियों को अनुवाद के माध्यम से सुलभ बनाने के लिए इंस्टीच्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन की स्थापना की जाएगी । यह संस्थान भाषाविदों , विषय विशेषज्ञों तथा तकनीक के माध्यम से अनुवाद एवं विवेचना के कार्य का विस्तार करेगा ताकि सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उच्चतर गुणवत्ता युक्त अधिगम सामग्री एवं अन्य सामग्री उपलब्ध हो सके।

8.देश भर में विभिन्न भारतीय भाषाओं के संस्थानों तथा विभागों को उल्लेखनीय रुप से मजबूत किया जाएगा।

9 . भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए अकादमी की स्थापना की जाएगी , जिसमें हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रुप से वह भाषा बोलने वाले लोग शामिल रहेंगे ताकि नवीन अवधारणाओं का सरल एवं सटीक शब्द भंडार तय किया जा सके। जहां तक संभव हो साझे शब्दों को भी अंगीकृत करने का प्रयास किया जाएगा ।

10.व्यापक स्तर पर भाषा शिक्षकों का निवेश किया जाएगा ।

11.भारतीय भाषाओं का संवर्धन तथा प्रसार तभी संभव है ,जब उन्हें नियमित तौर पर प्रयोग किया जाए । इसे बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं को व्यापक स्तर पर लागू किया जाएगा । भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोजगार अर्हता के मानदंडों को एक हिस्से के तौर पर शामिल किया जाएगा।

इस शिक्षा नीति में घर की भाषा / मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा पर प्रबल जोर अवश्य है ,लेकिन किसी भी भाषा को थोपने की बात नहीं कही गई है तथा न ही किसी भाषा की उपेक्षा की गई है । संस्कृत,तमिल, तेलुगू ,कन्नड़ जैसी शास्त्रीय एवं अन्य भारतीय भाषाओं में सौहार्द व समन्वय स्थापित करने तथा इसके माध्यम से उन भाषाओं में निहित सांस्कृतिक विरासतों से अवगत कराते हुए जनमानस में आदर भाव जागृत करने की पृष्ठभूमि तैयार करने की चेष्टा की गई है । इसमें साझी सभ्यता, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना की झलक मिलती है । समस्त भारतीय भाषाओं के संवर्धन पर बल दिया गया है । इसमें लुप्त हो रही भाषाओं को पुनर्जीवित करने की मुहिम का स्वर है । विश्व संस्कृति के दर्शन के लिए विदेशी भाषाओं को सीखने का भी विकल्प है।

भाषा विमर्श की दृष्टि से योजना एवं नीति निर्णयन आदि के स्तर पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पहली नजर में कई स्तरों पर समावेशी प्रतीत होती है । कार्यान्वयन के समय इस नीति की असली परीक्षा होगी । वैसे भी भारत में भाषा का मामला अत्यन्त संवेदनशील रहा है । यहां शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची में शामिल है । इस शिक्षा नीति के अंतर्गत भाषा संबंधी संदर्भों में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों के बीच समन्वय एवं तालमेल विशेषत: अपेक्षित होगा । आशा की जानी चाहिए कि भारत संतति के समग्र समुत्थान एवं भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सर्वग्राह्य पक्षों को भारत के जन गण एकजुट होकर आत्मसात् करेंगे तथा असहमति की धारा को समन्वयात्मक मोड़ प्रदान करेंगे।

पल्लब दास
मुख्य खजांची
ठेकाशु शाखा, असम

सतर्कता - आलेख

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

हेनरी कैंपबेल ब्लैक की विश्वप्रसिद्ध लॉ डिक्शनरी के अनुसार विजिलेंस अर्थात सतर्कता का अर्थ है जागरुकता या सावधानियां। यह सामान्य रुप से गतिविधि की एक प्रक्रिया है जिससे कर्मचारियों और संगठन को प्रभावी बनाने और दक्षता प्राप्त करने की दिशा में त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई सुनिश्चित होती है । सतर्कता का उद्देश्य एक संगठनात्मक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जहां पारदर्शिता और जवाबदेही लाने के लिए मानक परिचालन प्रक्रियाओं को निर्धारित करके कदाचार को कम किया जाता है। इसलिए भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने के लिए सतर्क रहना सबसे पहला और महत्वपूर्ण कदम है।

भारत जैसे लोकतंत्र में भ्रष्टाचार को देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक बड़ी बाधा के रुप में पहचाना गया है।भ्रष्टाचार व्यवस्था के भीतर पनपता है और ज्ञान के अभाव में अंततः उसी व्यवस्था में विभागों के अधिकांश कार्यों को पंगु बना देता है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल संस्था द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि 60% से अधिक भारतीयों ने अपना कार्य कराने के लिए सरकारी अधिकारी को रिश्वत दी है।

भ्रष्टाचार और सतर्कता की दिशा में भारत की पहल: भारत सरकार द्वारा 1964 में केंद्रीय सतर्कता आयोग या सीवीसी की स्थापना केंद्र सरकार की एजेंसियों को सतर्कता के क्षेत्र में परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए की गई थी।तब से लोक प्रशासन में निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए आयोग का निरंतर प्रयास रहा है और इसी के परिणामस्वरुप आम जनता को सतर्कता के महत्व के बारे में शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल लौह पुरुष स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन अर्थात 31 अक्तूबर वाले सप्ताह के दौरान **सतर्कता जागरुकता सप्ताह** का आयोजन किया जाता है।

इसके अलावा दोषपूर्ण कार्य और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए बहुत सारे भ्रष्टाचार विरोधी कानून और नियम जैसे सूचना का अधिकार अधिनियम-2005, लोक सेवा कानून का अधिकार, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988, बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम-1988, लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम-2013 आदि बनाए गए हैं। धन शोधन अधिनियम-2002, फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट इंडा (एफआईयू-आईएनडी), फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स और नए केवाईसी और सीकेवाईसी मानदंडों को भी बैंकिंग क्षेत्रों में मनी लॉन्ड्रिंग को रोकने और काले धन के खिलाफ लड़ने के लिए अद्यतन किया गया है।

संयुक्त प्रतिबद्धता: कोई एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता।प्रभावी सतर्कता के लिए केंद्र और राज्य सरकार के सभी संगठनों में प्रभावी और कुशल कामकाज के लिए एक उत्कृष्ट पारदर्शी तंत्र की आवश्यकता होती है और आम जनता को मिलकर काम करना चाहिए। पारदर्शिता लाने के लिए अधिकांश सरकारी अभिलेखों में सार्वजनिक और राजनीतिक दबाव आदि के बिना पुलिस की स्वतंत्र जांच के लिए स्वतंत्र प्रेस और मीडिया होना चाहिए।

इसके अलावा व्हिसलब्लोअर के लिए एक सार्वजनिक मंच के साथ-साथ उन्हें पुरस्कार और सुरक्षा प्रदान करना, हर प्रणाली में कुकर्मों के लिए सजा और एक नागरिक के रुप में उनकी जिम्मेदारी और जवाबदेही के बारे में सार्वजनिक शिक्षा भी आवश्यक है।

निष्कर्ष: भारत में हर व्यवस्था में भ्रष्टाचार की घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।बैंकिंग क्षेत्र में धोखाधड़ी की हालिया घटनाएं जैसे- किंगफिशर 9000 करोड़ रुपये और पीएनबी की 11000 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की घटना हो

शेष पेज 44 पर

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

गायत्री प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक
कार्मिक सेवा विभाग, प्र. का.

आज प्रत्येक देश स्वयं को विकसित देश की श्रेणी में शामिल करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है । लेकिन कुछ ने अपनी सतर्क और सुनियोजित नीतियों से खुद को विकसित कर लिया पर कुछ विकासशील और कुछ अविकसित ही रह गए, क्यों?

कहीं न कहीं इसका उत्तर सतर्कता की कमी कह सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम भारत का इतिहास देखें तो कभी भारत को पूरी दुनिया में **"सोने की चिड़िया"** कहा जाता था। लेकिन फिर भी आज यह देश पूर्ण विकसित देशों की सूची में नहीं है । इसका सबसे बड़ा कारण बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला (1756-1757 ई.) की असतर्कता थी। जिसने पूर्व नवाब उर्फ नाना, **अलीवरदी खाँ** द्वारा कही गई बात **"अंग्रेजों को कभी यहाँ किलेबंदी और सिपाही रखने की छूट मत देना"** को भूल गया और उसने बिना कुछ सोचे **राबर्ट क्लाइव** को **ईस्ट इंडिया कंपनी** के माध्यम से भारत में अंग्रेजों की जड़ मजबूत करने दिया । इतना ही नहीं उसने अपने सेनापति, मीर जाफर पर अंधविश्वास किया जिसने पलासी के युद्ध (23 जून 1757 ई.) में अंग्रेज़ों का साथ दिया ।इस युद्ध में सिराजुद्दौला की हार हुई और अंग्रेजों ने मीर जाफर को अपना कठपुतली शासक बना दिया । मीर जाफर ने देश में **हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य** की शुरुआत की और इसका फायदा अंग्रेजों ने **'बांटो और शासन करो'** की नीति से उठाया । अंग्रेजों ने भारत पर 200 वर्षों तक शासन किया और **"सोने की चिड़िया"** को **भूखी चिड़िया** बना दिया। कई महापुरुषों के बलिदान से हमारे देश को 1947 मे आजादी तो मिली लेकिन आज भी हम अपनी असतर्कता और भ्रष्ट नीतियों के कारण पूरे देश की समृद्धि में बाधा बने हुए हैं जिसके कारण कई जघन्य अपराधों को आसानी से अंजाम दिया जाता है। इसमें बलात्कार, चोरी, रिश्वत, दहेज और हत्याएँ जैसी अपराधें शामिल हैं ।

हम इन सभी समस्याओं के लिए अपनी सरकार को दोषी ठहराते रहते हैं । क्या यह सही है ? नहीं बिलकुल नहीं । देश के हर नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी उठानी होगी और सरकार द्वारा लागू योजनाओं में साथ देना होगा। भारत सरकार द्वारा देश में सतर्कता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बहुत ही सराहनीय कदम उठाए गए हैं जिसके तहत **केन्द्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम** 2003 में पारित की गई । **सरदार वल्लभ भाई पटेल** के जन्म दिवस 31 अक्तूबर को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष अक्तूबर माह के अन्तिम सप्ताह में **"सतर्कता जागरुकता सप्ताह"** मनाया जाता है। इसके तहत अनेक संगठनों द्वारा भिन्न-भिन्न जगहों पर लोगों को जागरूक किया जाता है। इसमें देश के युवाओं को एक ईमानदार और गैर-भेदभावपूर्ण तथा भ्रष्टाचार मुक्त स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

अतः हमें अपनी और अपने देश के विकास के लिए खुद में एक जागरुक और ईमानदार चरित्र का निर्माण करना होगा और देश के विकास में खुद की हिस्सेदारी सुनिश्चित करनी होगी ।

आओ हम प्रण करें सरकार को नहीं बनाएंगे जिम्मेदार,
अपने देश के विकास में हम खुद को बनाएँगे हिस्सेदार।
'हम मिलकर बने एक देश ।'

हम इन सभी समस्याओं के लिए अपनी सरकार को दोषी ठहराते रहते हैं । क्या यह सही है ? नहीं बिलकुल नहीं । देश के हर नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी उठानी होगी और सरकार द्वारा लागू योजनाओं में साथ देना होगा। भारत सरकार द्वारा देश में सतर्कता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बहुत ही सराहनीय कदम उठाए गए हैं जिसके तहत **केन्द्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम** 2003 में पारित की गई । **सरदार वल्लभ भाई पटेल** के जन्म दिवस 31 अक्तूबर को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष अक्तूबर माह के अन्तिम सप्ताह मे **"सतर्कता जागरुकता सप्ताह"** मनाया जाता है।

साइबर जगत

तेनाली की साइबर कथाएं

प्रत्येक वर्ष 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में पालन किया जाता है। इस वर्ष का विषय है- "महिला नेतृत्व: कोविड-19 की दुनिया में एक समान भविष्य को प्राप्त करना"। इसे ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत है तेनाली की नवीन कथा— साइबर स्मार्ट महिला

महिलाएं वर्षों से साइबर अपराधियों के निशाने पर रहीं हैं और इस कोरोना महामारी के कारण लगाए गए लॉकडाउन में ये अपराधी और अधिक दुस्साहसी हो गए हैं।

महामारी में लॉकडाउन ने हमें घर में कैद कर दिया है जिसके चलते हम अपना स्मार्ट फोन, लैपटॉप, टैबलेट आदि ज्यादा व्यवहार करते हैं और इसमें भी सबसे ज्यादा इनके कैमरे क्योंकि जूम, वेबेक्स, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स या गूगल मीट, जो भी व्यवहार करें, हमारे साथ-साथ हमारे कैमरे भी आजकल बहुत सक्रिय हो गए हैं।

इस लॉक़डाउन में हम सभी अपना फोन आदि अपने ऑफिस कार्य, पढ़ाई और सामाजिक संपर्क आदि के लिए व्यवहार करते हैं। दुर्भाग्य से इस सुविधा ने हमें एक साइबर हमला 'कमफेक्टिंग' जो कैमरा और इनफेक्टिंग शब्दों का मिश्रण है, की चपेट में ले लिया है। यह तब होता है जब हैकर्स हमारे डिवाइस के कैमरे को दूर से ही नियंत्रित कर लेते हैं।

आज, मैं बताऊंगा कि कैसे रश्मि कैमरा हैकिंग की शिकार हुई।

रश्मि धोखाधड़ी की शिकार हुई

रश्मि को इंटरनेट की लत है। वह सोशल मीडिया एप्प पर बिना सोचे समझे गेम खेलती है और प्रतियोगिताओं में भाग लेती रहती है। अनजान व्यक्तियों से मित्रता अनुरोध स्वीकार करने में भी वह बहुत तेज है।

अपने सोशल मीडिया पोस्ट में फालोवर्स के लाइक और कमेंट्स के जुनून के साथ वह यदा-कदा अपने फोन को अपडेट के लिए हर जगह ले जाया करती थी।

एक दिन, रश्मि की दोस्त प्रिया कुछ रैंडम वेबसाइट में रश्मि की निजी वीडियो के बारे में बताती है।

रश्मि बहुत चिंतित हो गई और उसने तुरंत मुझे फोन किया।

रश्मि रोने लगी और बतायी कि वह अक्सर नए एप्प और गेम डाउनलोड करती थी। कुछ समय से वह अपने फोन में कई दिक्कतों का सामना कर रही है। उसका फोन दिन प्रति दिन धीमा होता जा रहा है। मैं समझ गया था कि उसके मोबाइल फोन में मलवेयर इंस्टाल होने के कारण वह कैमरा हाईजैकिंग की शिकार हो गई है।

रश्मि को अब क्या करना चाहिए ?

- वीडियो क्लिप डाउनलोड करने के लिए घटना की सूचना तत्काल नजदीकी साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन को दें।
- राष्ट्रीय साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर रिपोर्ट करें।
- अनजान एप्प को अनइंस्टाल करें तथा महत्वपूर्ण डेटा का बैकअप लेने के बाद फुल फ़ैक्टरी रीसेट करें।
- मोबाइल डिवाइस ओएस, एप्प्स और एंटीवाइरस को अपडेट करें।

वास्तव में हुआ क्या था ?

लंबे समय से रश्मि ने अपने डिवाइस के ओएस एवं एंटीवाइरस को अपडेट नहीं किया था। उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि हाल में इंस्टाल किए गए गेम में मलवेयर है। गेम इंस्टाल करते समय उसने अनजाने में सभी स्वीकृतियों की अनुमति दे दी। मलवेयर बिना उसकी अनुमति के उसके फोन के आगे और पीछे के कैमरों को ऑन कर दिया और गुप्त रूप से वीडियो लेने लगा। मलवेयर से अनजान रश्मि ने एक दिन शॉपिंग माल में ड्रेस ट्रायल करते समय ट्रायल रूम में अपना फोन एक तरफ रख दिया। इसके कारण मलवेयर द्वारा उसकी निजी वीडियो की रिकार्डिंग की गई और उसके बाद आपत्तिजनक साइटों पर इसे अपलोड किया गया।

इससे कैसे सुरक्षित रहें ?

- सोशल मीडिया पर संदिग्ध लिंक्स/रैंडम गेम्स/विज्ञापनों पर क्लिक ना करें।
- इंस्टेंट मैसेजिंग एप्प्स में मीडिया-आटो-डाउनलोड सुविधा को बंद करें।
- एप्प्स को अनुमति देते समय सावधानी बरतें।
- एहतियात के तौर पर जब वेबकैम/मोबाइल फोन कैमरा उपयोग में न हो तो उसे ढक कर रखें।
- लैपटॉप/डेस्कटॉप जब उपयोग में न हो तो उन्हें बंद कर दें। डिवाइस के हाइबरनेशन/स्लीप मोड आपको सुरक्षा के झूठे प्रलोभन देते हैं।
- मोबाइल डिवाइस से अनावश्यक एप्प्स नियमित रुप से हटाते रहें।

साइबर सतर्क रहें, सुरक्षित रहें।

धन्यवाद

सीआईएसओ विभाग की प्रस्तुति

जनता की सेवा – जनता की भाषा में – इस बार पंजाबी

	पंजाबी	हिंदी	अंग्रेज़ी
1	तुहादा नाम कि है?	आपका नाम क्या है?	What is your name ?
2	तुसी किथे रहिन्दे हो?	आप कहां रहते हैं?	Where do you live ?
3	कि हाल चाल तुहादा?	आपकी तबीयत कैसी है?	How is your health ?
4	किरपा करके बैठो जी	आइए , बैठिए ?	Please be seated ?
5	चायल ओंगे जां कुछ होर?	चाय लेंगे या और कुछ?	Tea or something else ?
6	कि मै तुहादी मदद कर सकदा(दी) हाँ?	क्या मैं आपकी मदद कर सकता (ती) हूँ ?	May I help you ?
7	कि तुसी हिन्दी बोल सकदे हो/ सकदी हैं?	क्या आप हिंदी बोल सकते (ती) हैं?	Can you speak Hindi ?
8	तुसी किस शाखा बिच आपना खाता रखदे हो?	आपका खाता किस शाखा में है?	In which branch do you keep your account ?
9	कि तुसी अपना केवाईसी फारम भरिया है?	क्या आपने केवाईसी फार्म भर दिया है?	Have you filled up your KYC form ?
10	तुसी बहुत परशानी विच लग रहे हो। गल कि है?	आप बहुत परेशान लग रहे हैं। क्या बात है?	You are much stressed. What is the matter ?
11	तुसी ऋण दियाँ शर्ता नू पढ़ लिया होना ?	आपने ऋण की शर्तों को पढ़ लिया होगा ?	You have definitely gone through the terms and conditions ?
12	तुहा देकारोबार दा सलाना टर्नओवर किन्ना है ?	आपके कारोबार का वार्षिक टर्न ओवर कितना है?	How much is your business annual turnover ?
13	असीकल तुहादी फैक्टरी दा दौरा करांगे।	हम लोग कल आपका कारखाना देखने जाएंगे।	We Shall visit your factory tomorrow
14	सादे बैंका दी ईह जमा सकीम तुहादे लई सही होवेगी।	हमारे बैंक की यह जमा योजना आपके लिए उपयुक्त होगी।	This deposit scheme of our bank shall suit you.
15	तुहादा एटीएम डेबिट कारड तियार है।	आपका एटीएम डॅबिट कार्ड तैयार है।	Your ATM debit card is ready
16	सानु इस मामले विच विस्तार नाल जानकरी दी लोड है।	हमें इस संबंध में विस्तृत सूचना चाहिए ।	We require detailed information in this matter.
17	किरपा करके हौली बोलो।	कृपया धीरे बात करें।	Please talk quietly.
18	तुहादी तरक्की ते बहुत-बहुत बधाई।	पदोन्नति के लिए आपको बहुत -बहुत बधाई ।	Congratulations on your promotion
19	किरपा करके इस कारज नू पूरा करन विच साडी सहाइता करो।	कृपया इस कार्य को करने में आप हमें सहयोग दें।	Please help us in completing this job
20	तुहादी कीमती राय लई धनवाद।	मूल्यवान सुझाव के लिए आपका धन्यवाद।	Thanks for your valuable suggestion
21	तुहादे पिता जी साडी शाखा दे बहुत पुराने अते कीमती गाहक सन।	आपके पिताजी हमारे बैंक के पुराने तथा सम्मानित ग्राहक थे।	Your father was very old and valued customer of our branch.

गतिविधियां

महामहिम राज्यपाल, झारखंड की उपस्थिति में नराकास (बैंक) कोलकाता की छमाही बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 70वीं बैठक 15 अक्तूबर, 2020 दिन- गुरुवार को वेब माध्यम से दो सत्रों में संपन्न हुई। इस बैठक में मुख्य अतिथि के रुप महामहिम **श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल, झारखंड** थीं। बैठक की अध्यक्षता यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल ने की। बैठक में यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास; श्री सुशोभन सिन्हा, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक; क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के अलावा अन्य सदस्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं के कार्यालयाध्यक्षों एवं उनके राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने भाग लिया। बैठक में श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व), कोलकाता; सुश्री मंजू शिरीन, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, कोलकाता तथा श्री नवीन कुमार प्रजापति, कार्यालयाध्यक्ष, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता विशेष रुप से जुड़े। बैठक में सदस्य कार्यालयों में हो रहे राजभाषा कार्यों की समीक्षा की गई तथा वित्तीय वर्ष 2019-20 में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त राजभाषा जागरुकता कार्यक्रम के तहत कार्यपालकों की भूमिका विषय पर **डॉ. जवाहर कर्णावट,** महाप्रबंधक-राजभाषा (सेवानिवृत्त) बैंक ऑफ बड़ौदा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। बैठक का संचालन **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं सदस्य सचिव, नराकास (बैंक), कोलकाता ने किया।

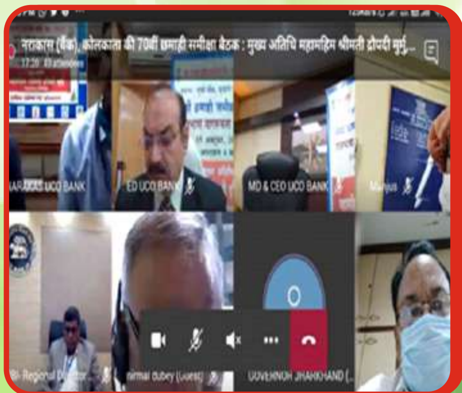

गतिविधियां

बैंक के राजभाषा अधिकारियों के लिए 5 दिवसीय गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक ने अनुवाद की सतत अध्ययन /अभ्यास की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए अपने राजभाषा अधिकारियों के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से दिनांक 02 नवंबर, 2020 से 6 नवंबर, 2020 तक 5 दिवसीय ऑनलाइन गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री विनोद कुमार संदलेश, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक -मानव संसाधन, कार्मिक सेवा, प्रशिक्षण एवं राजभाषा ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के विभिन्न संकाय सदस्यों यथा **श्री विनोद संदलेश, संयुक्त निदेशक; डॉ. नवीन प्रजापति, सलाहकार; श्रीमती मीना गुप्ता, सहायक निदेशक; श्रीमती प्रज्ञा शाहीन, सहायक निदेशक; श्री सतीश कुमार पाण्डेय, सलाहकार एवं श्री नरेश कुमार, उप निदेशक** द्वारा अत्यंत सुचारु रुप से संपन्न किया गया एवं सभी प्रशिक्षणार्थियों ने इसका खूब लाभ उठाया।

दिनांक 02.11.2020 को कार्यक्रम का प्रथम सत्र - 'भारत सरकार में अनुवाद की व्यवस्था' तथा द्वितीय सत्र 'भारत सरकार की राजभाषा नीति' विषय पर आधारित था जिसमें **श्री विनोद संदलेश जी, संयुक्त निदेशक** ने प्रकाश डाला । **डॉ. नवीन प्रजापति, सलाहकार** द्वारा 'राजभाषा कार्यान्वयन में आनेवाली समस्याएं और उनका समाधान' तथा 'सामान्य प्रशासन से संबंधित वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ' विषय पर विचार प्रस्तुत किया गया । 'सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद' विषय पर **श्रीमती मीना गुप्ता, सहायक निदेशक** द्वारा लिया गया। **श्रीमती प्रज्ञा शाहीन, सहायक निदेशक द्वारा 'अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं'** विषय पर प्रकाश डाला गया । **श्री सतीश कुमार पाण्डेय, सलाहकार** द्वारा "दैनिक प्रयोग की अभिव्यक्तियाँ तथा अंग्रेजी की विदेशी अभिव्यक्तियाँ" विषय पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया । **श्री नरेश कुमार, उप निदेशक** द्वारा 'अनेकार्थी शब्दों के अनुवाद की समस्याएं' तथा पारिभाषिक शब्दावली (वित्त, प्रशासन एवं बैंकिंग)विषय पर विचार प्रस्तुत किए गए । कार्यक्रम के समापन में **हमारे कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास जी एवं श्री मोहन लाल वाधवानी**, निदेशक एवं प्रभारी, **केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार** भी सम्मिलित हुए जिससे इस कार्यक्रम का मान्य-वर्धन हुआ । श्री अजय व्यास जी ने कहा कि यह पांच दिवसीय गहन अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम हमारे राजभाषा अधिकारियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा तथा विश्वास है कि वे अधिक कुशलता से अपने कार्यों को अंजाम दे सकेंगे।इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी ने किया।

बैंक स्थापना दिवस – 6 जनवरी, 2021

एमडी श्री अतुल कुमार गोयल

ईडी श्री अजय व्यास

महाप्रबंधक श्री नरेश कुमार

बैंक स्थापना दिवस पर संस्थापक स्व. जी डी बिड़ला जी की मूर्ति पर माल्यार्पण करते हुए

एमडी सर एवं ईडी सर का संबोधन

बैंक स्थापना दिवस पर उपस्थित कार्यपालकगण

प्रधान कार्यालय में गणतंत्र दिवस, 2021 का पालन

एमडी सर झंडोत्तोलन एवं सलामी देते हुए

एमडी एवं ईडी सर का संबोधन

राष्ट्रीय तकनीकी कार्यशाला

यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में अंचल कार्यालय, अजमेर द्वारा **दिनांक 11.12.2020** को **"एमएस वर्ड एवं एक्सेल हिंदी – स्मार्ट तरीके से कार्य"** विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि **डॉ. मीनाक्षी जौली,** संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया । इस राष्ट्रीय तकनीकी संगोष्ठी की अध्यक्षता **श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक** ने की जिसमें **श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक मानव संसाधन एवं राजभाषा** भी उपस्थित थे । **श्री राजेश कुमार तिवारी,** उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रबंधक अजमेर अंचल ने मंचासीन सभी सुधीजनों का स्वागत किया । मुख्य वक्ता एवं संकाय के रूप में **श्री ओ पी अग्रवाल,** प्रबंधक (सेवानिवृत्त) भारतीय रिजर्व बैंक एवं माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफाइड ट्रेनर ने बहुत सरल एवं बेहतर तरीके से माइक्रोसॉफ़्ट वर्ड एवं एक्सेल के बारे में गूढ एवं विशिष्ट जानकारी दी। सभी प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला की सराहना की। कार्यक्रम में सभी अंचल कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों ने प्रतिभागिता की।

शेषांश पेज 36

ही गई बावजूद इसके कि आरबीआई की कड़ी सतर्कता ने वित्तीय क्षेत्रों में होनेवाली धोखाधड़ी को पंगु बना दिया है ।इसलिए ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने अपनी रिपोर्ट भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 2019 में 180 देशों में से 80 वें स्थान पर भारत को स्थान दिया, जबकि यह पिछले वर्ष 78 वां था।अभी भी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने में देर नहीं हुई है। एक कहावत है सावधानी हटी, दुर्घटना घटी अर्थात हम जैसे ही असावधान होते हैं, कोई न कोई दुर्घटना घट जाती है। भ्रष्टाचार के लिए भी ऐसा ही है, हमारे सावधान होने से इसमें कमी आयेगी और यह सच भी है।वस्तुतः समृद्ध होने के लिए सतर्क रहना बहुत जरूरी है। याद रखें कि एक हजार मील की यात्रा एक कदम से शुरू होती है और यह एक कदम जागरूकता या सतर्कता होनी चाहिए।

यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान

यूको बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा संकल्प राजभाषा के तहत वर्ष 2019-20 से **"यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान"** की शुरुआत की गई है। इस वर्ष यह सम्मान 96 वर्षीय पद्मश्री डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर, संस्थापक एवं अध्यक्ष, केरल हिंदी साहित्य आकदमी को प्रदान किया गया । डॉ. एन. चंद्रशेखरण नायर का जन्म कोल्लम, केरल में दिनांक 27 जून,1924 को हुआ।डॉ.एन चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम के मशहूर साहित्यकार हैं।वे एक कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार और आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। डॉ. नायर को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कार और राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त प्राप्त हुए हैं।

यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान स्वरूप उन्हें रु 51,000/- की राशि तथा स्मृतिका प्रदान की गई। यह कार्यक्रम प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में अंचल कार्यालय एर्णाकुलम के सहयोग से दिनांक 18.12.2020 को त्रिवेन्द्रम में डॉ. नायर के आवास पर ऑनलाइन आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक, श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक, मानव संसाधन, कार्मिक सेवा, प्रशिक्षण एवं राजभाषा,श्री रविकुमार के, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम; श्री एस के सचदेवा, अंचल प्रमुख चंडीगढ़ सहित देश भर में पदस्थ सभी राजभाषा अधिकारी तथा एर्णाकुलम अंचल के अधीन शाखाओं एवं कार्यालयों के अन्य अधिकारीगण के साथ-साथ **पद्मश्री डॉ. नायर के पारिवारिक सदस्यगण एवं उनके शिष्य और प्रशंसक** भी उपस्थित थे।

विश्व हिंदी दिवस पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में नराकास (बैंक), कोलकाता द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस एवं महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सहयोग से दिनांक 22.01.2021 को **"वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा एवं संस्कृति"** विषय पर ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि एवं उद्घाटनकर्ता के रूप में **डॉ. मीनाक्षी जौली**, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह, मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित थीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में **प्रो. विनोद कुमार मिश्र**, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा मुख्य वक्ता के रूप में **प्रो.वेद रमण पाण्डेय**, आईसीसीआर चेयर, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस उपस्थित थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति प्रो. गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल, वरिष्ठ व्याख्याता (हिंदी), महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस एवं उनकी टीम तथा प्रो. सुतीक्षण शर्मा मुंगरु (विशाल), व्याख्याता हिंदुस्तानी संगीत, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस एवं उनकी टीम द्वारा दी गई। संगोष्ठी की अध्यक्षता **श्री अतुल कुमार गोयल**, एमडी एवं सीईओ यूको बैंक तथा अध्यक्ष बैंक, नराकास कोलकाता ने की। इसके अतिरिक्त **श्री अजय व्यास**, कार्यपालक निदेशक, यूको बैंक ने भी संगोष्ठी को संबोधित किया।

मातृभाषा एवं हमारे संस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता द्वारा **अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस** एवं **अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस** के उपलक्ष्य में 08 मार्च, 2021 को **"मातृभाषा और हमारे संस्कार"** विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रुप में **श्रीमती मधु कांकरिया**, प्रख्यात लेखिका, कथाकार एवं उपन्यासकार जुड़ी थीं। श्रीमती कांकरिया कोलकाता निवासी हैं। किसी विशेष प्रयोजन हेतु वह वर्तमान में बांग्लादेश में निवास कर रहीं है तथा वे बांग्लादेश से ही ऑनलाइन कार्यक्रम से जुड़ी थीं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता **श्री अतुल कुमार गोयल,** एमडी एवं सीईओ, यूको बैंक तथा अध्यक्ष नराकास (बैंक), कोलकाता ने की जिसमें **श्री अजय व्यास**, कार्यपालक निदेशक, यूको बैंक की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन **श्री अमलशेखर करणसेठ**, मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं सदस्य सचिव ने किया।

इस संगोष्ठी में नराकास (बैंक), कोलकाता के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारीगण के साथ-साथ यूको बैंक के सभी 42 अंचलों के राजभाषा अधिकारियों ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर श्रीमती कांकरिया का वक्तव्य अत्यंत रोचक था। सभी प्रतिभागियों ने इसकी खूब सराहना की। प्रस्तुत हैं कार्यक्रम के कुछ चित्र:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदीतर भाषा-भाषियों को राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से सी-डैक पुणे द्वारा ऑनलाइन लीला हिंदी प्रवाह पाठ्यक्रम पैकेज तैयार किया गया है। लीला पैकेज से अंग्रेजी तथा 14 अन्य भारतीय भाषा यथा असमिया, बोड़ो, बांग्ला, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल एवं तेलुगू के माध्यम से हिंदी सीख सकते हैं।

श्री इशराक अली खान का यूको बैंक में कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यग्रहण

श्री इशराक अली खान ने 10 मार्च, 2021 को यूको बैंक में कार्यपालक निदेशक के रुप में कार्यग्रहण किया। श्री खान का बैंकिंग एवं तकनीकी क्षेत्र में 3 दशक से भी अधिक का अनुभव है। वे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में मुख्य महाप्रबंधक और मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी (सीटीओ) थे और पहले मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (सीआईएसओ) भी थे। श्री खान विज्ञान में स्नातकोत्तर, सर्टिफाइड प्रोजेक्ट मैनेजमेंट प्रोग्राम प्रोफेशनल (पीएमपी) तथा आईडीआरबीटी, हैदराबाद से सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर सिक्योरिटी में सर्टिफिकेट प्राप्त हैं। वह इंडियन इंस्टीच्यूट आफ बैंकर्स के सर्टिफाइड एसोसिएट (सीएआईआईबी) भी हैं। ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का यूको बैंक में कार्यपालक निदेशक के रुप में आगमन शुभ संकेत है। हमें विश्वास है कि उनके अनुभव से बैंक में सकारात्मक परिवर्तन आएगा और बैंक प्रगति की नई बुलंदियों को प्राप्त करेगा।

श्री इशराक अली खान, कार्यपालक निदेशक का प्रधान कार्यालय में कार्यग्रहण

राजभाषा विभाग,
प्रधान कार्यालय द्वारा श्री खान जी का पुष्प एवं पुस्तक से स्वागत

लोकप्रिय हिंदी कार्यक्रम- 26 वां हिंदी मेला को सहयोग

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन द्वारा संचालित एवं यूको बैंक की प्रेरणा शक्ति से दिनांक 26 दिसंबर, 2020 से 01 जनवरी, 2021 तक 26 वां हिंदी मेला का आयोजन किया गया। कोलकाता का यह हिंदी मेला युवाओं, विद्यार्थियों और साहित्य-प्रेमियों का एक अनोखा सांस्कृतिक उत्सव है। इस मेले में लघु नाटक, काव्य आवृत्ति, हिंदी ज्ञान, काव्य संगीत, लोक गीत, काव्य नृत्य, रचनात्मक लेखन, कविता पोस्टर, आशु भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस मेले का समापन एवं पुरस्कार समारोह 01 जनवरी, 2021 को भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपने बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल एवं श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा उपस्थित थे।

एमडी सर का संबोधन

9 वां अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा 19-20 मार्च, 2021 को सेंट्रल स्टाफ कॉलेज, कोलकाता में दो दिवसीय **"9वां अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का थीम **"शिखर की चुनौती"** रखा गया। सम्मेलन में **"राजभाषा प्रदर्शनी"** लगाई गई। **श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी** द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी सह सम्मेलन का उद्घाटन किया गया। राजभाषा प्रदर्शनी में प्रधान कार्यालय के साथ सभी अंचलों ने प्रतिभागिता की। इस प्रदर्शनी में विगत 1 वर्ष में देश भर में राजभाषा विभाग द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई। आदरणीय एमडी सर ने प्रदर्शनी का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया, सराहना की और कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक-मानव संसाधन एवं राजभाषा ने स्वागत संभाषण प्रस्तुत किया। एमडी सर ने अपने उद्घाटन संबोधन में राजभाषा अधिकारी सम्मेलन को राजभाषा का कुंभ कहा और अंचलों से क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार तथा प्रधान कार्यालय को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीतने हेतु भरपूर प्रयास करने पर ज़ोर दिया। कंठस्थ में राजभाषा अधिकारियों के बेहतरीन प्रदर्शन पर बधाई दी एवं कहा कि ये **एक टीम, एक स्वप्न** का बेहतरीन उदाहरण है। उन्होंने कहा कि अच्छे कार्य का अच्छा फल मिलता है और एक उद्घोष -**एक ही लक्ष्य, एक ही नारा, राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हो हमारा** से प्रण भी कराया। **श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक** ने शिखर की चुनौती-टीम भावना, नेतृत्व एवं सफलता विषय पर बीज सम्बोधन दिया। **श्री बी एल मीना, निदेशक, कार्यान्वयन एवं सेवा,** राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने "शिखर की चुनौती-राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के संदर्भ में बहुत सुंदर मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अतुल कुमार गोयल** राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

मंगलाचरण की प्रस्तुति

एमडी सर द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

श्री नरेश कुमार, म.प्र.

9 वें अखिल भारतीय यूको बैंक राजभाषा अधिकारी सम्मेलन में एमडी सर का संबोधन

अनुगूँज के नवीनतम अंक का विमोचन

श्री बी एल मीना, निदेशक राजभाषा विभाग, भारत सरकार सम्मेलन में मार्गदर्शन करते हुए

सम्मेलन के दूसरे दिन श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं राजभाषा तथा श्री मनोहर पाढ़ी, उप महाप्रबंधक एवं प्राचार्य सेंट्रल स्टाफ कॉलेज की उपस्थिति में राजभाषा अधिकारियों द्वारा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न क्षेत्रिय भाषाओं यथा छत्तीसगढ़ी, छोटा नागपुरी, कुड़ूक, मलयालम, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी तथा हिंदी लोक गीत की प्रस्तुति हुई।

श्री अजय व्यास,
कार्यपालक निदेशक का शिखर की चुनौती -टीम भावना, नेतृत्व एवं सफलता विषय पर बीज संबोधन

श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक श्री आलोक कुमार श्रीवास्तव एवं श्री यशवंत गायकवाड़ को सेवानिवृति अवसर पर स्मृतिका एवं उपहार भेंट करते हुए

एमडी एवं सीईओ के साथ सम्मेलन का समूह चित्र

यूको मातृभाषा सम्मान : 2020-21

हिंदी/क्षेत्रीय भाषा माध्यम से राज्य सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले शीर्ष 2 अभ्यर्थियों को सम्मान

जयपुर अंचल

इंदौर अंचल

रायपुर अंचल

वाराणसी अंचल

यूको राजभाषा सम्मान : 2020-21

हिंदी एमए परीक्षा के शीर्ष 2 विद्यार्थियों को सम्मान

नाम -सुधा चौधरी
पिता -धनी चंद चौधरी
रवींद्र भारती विश्वविद्यालय

नाम -नेहा साव
पिता -नारायण साव
रवींद्र भारती विश्वविद्यालय

प्रधान कार्यालय

लखनऊ अंचल

इंदौर अंचल

भुवनेश्वर अंचल

बेंगलुरु अंचल

वाराणसी अंचल

रायपुर अंचल

यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

अगरतला अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ.कालीचरण झा
विभागाध्यक्ष (प्रभारी)हिंदी विभाग,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय

अजमेर अंचल
मुख्य वक्ता - श्री ऋषभ चंद लोढ़ा
कार्यपालक निदेशक,
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया (सेवानिवृत्त)

बेंगलुरु अंचल
मुख्य वक्ता - श्री टी सी जी नंबूदिरी
निदेशक आईआईबीएफ

भुवनेश्वर अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ. बी के दाश
पूर्व महाप्रबंधक, यूको बैंक एवं संप्रति रजिस्ट्रार,
बिड़ला ग्लोबल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

इंदौर अंचल
मुख्य वक्ता - श्रीमती अर्यमा सान्याल
निदेशक, अहिल्याबाई होल्कर विमानपत्तन ,
इंदौर

जयपुर अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ.संगीता जैन
प्रो. अग्रवाल पी जी कॉलेज, जयपुर

कानपुर अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ.आभा द्विवेदी
कार्य समिति सदस्य,
भाषा आयोग, उ.प्र.सरकार

लखनऊ अंचल
मुख्य वक्ता - प्रो. अनिल मोहन
डीन, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय

पटना अंचल
मुख्य वक्ता - श्री राजीव मोहन
पूर्व महाप्रबंधक,यूको बैंक

रायपुर अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ. शैल शर्मा प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष, भाषा एवं साहित्य अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

वाराणसी अंचल
मुख्य वक्ता - डॉ. वीरेंद्र प्रसाद सिंह
पूर्व महाप्रबंधक, यूको बैंक

गुवाहाटी अंचल
मुख्य वक्ता - प्रो. आर एम पंत,
निदेशक, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती
राज संस्थान, पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी

यूको राजभाषा मिशन

"राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट श्रेणी
का बैंक बनने हेतु,
बैंक के सभी स्टाफ सदस्यों को
राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा
दृढ़तापूर्वक सक्रिय कर एवं
राजभाषा नीति का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कर,
नवीनतम प्रौद्योगिकी को राजभाषा से जोड़कर,
बैंकिंग को जन-उन्मुख बनाते हुए
बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना"

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का
Honours Your Trust

मुद्रक- पॉपुलर बाइंडर एंड को, 100/5 /1A, एस एन बनर्जी रोड, कोलकाता-14, फोन- 907682556, ई-मेल popular_binder@yahoo.in